

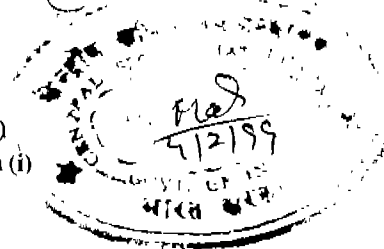


भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



सं. 475]

नई दिल्ली, सोमवार, दिसम्बर 7, 1998/अग्रहायण 16, 1920

No. 475]

NEW DELHI, MONDAY, DECEMBER 7, 1998/AGRAHAYANA 16, 1920

महानिदेशालय (रक्षोपाय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 12 नवम्बर, 1998

विषय : भारत में हार्ड बोर्ड (हार्ड डेंसिटी फाइबर बोर्ड) के आयात से संबंधित रक्षोपाय जांच—अंतिम निष्कर्ष।
सा. का. नि. 720 (अ).—सीमा शुल्क टैरिफ ऑथोरिटीम 1975 और सीमा शुल्क टैरिफ रक्षोपाय शुल्क की पहचान और निर्धारण नियमावली को ध्यान में रखते हुए।

क. प्रक्रिया

2. आल इंडिया फाइबर बोर्ड मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन द्वारा प्रस्तुत किए गए एक आवेदन के अनुसरण में भारत में हार्ड बोर्ड के आयात के संबंध में रक्षोपाय जांच शुरू करने का नोटिस 24 अप्रैल 1998 को जारी किया गया था और इसे भारत के गजट असाधारण भाग II, खंड 3- उपखण्ड 118 में 24.4.98 को प्रकाशित किया गया था। नोटिस की एक प्रति सभी ज्ञात रूढ़ि पक्षों को भी भेजी गई थी यथा :-

एशोसिएशन

वि आल इंडिया फाइबर बोर्ड मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन,
दारा जेली बोर्ड लिमिटेड मुम्बई-400020.

घरेलू उत्पादक

118 वेस्टर्न इंडिया प्लाईवुड्स लि०, कन्नूर-670010

118 जेली बोर्ड लि०, मुम्बई-400020.

111 नेशनल बोर्ड लि० बैंगलोर जिनका कारखाना पानीखेयती, गयाहट्टी-781026 में है।

आयातक

- § 1 § श्री दुर्गा इंटर प्राइजेज, चेन्नई-600012
 § 11 § रेनबो एक्सपोर्ट्स, गांधीधाम-370201
 § 111 § बालाजी टिम्बर एंड प्लाईवुड, चेन्नई-600007
 § 1 V § टैम ट्रेडर्स, चेन्नई-600003
 § V § जय मिरर इंडस्ट्री, चेन्नई-600112
 § V 1 § इंडोमाल मार्केटिंग प्रा.लि., चेन्नई-600007
 § V 11 § श्री कृष्ण टिम्बर ट्रेडर्स, चेन्नई-600112
 § V 111 § महावीर एजेंसीज, चेन्नई-600003
 § 1 × § इंडो थार्ड इंटरप्राइजेज, चेन्नई-600040
 § × § गौतम ग्लास, हैदराबाद
 § × 1 § फाइबर फोइल्स लि § मुम्बई-400093
 § × 11 § हिन्दुस्तान इलेक्ट्रो ग्रेफाइट्स लि0, भोपाल-462016

निर्यातक

- § 1 § एग्रो लाईन्स कम्पनी लि0, थाइलैंड ।
 § 11 § थार्ड केन बोर्ड कम्पनी लि0, थाइलैंड ।
 § 111 § मैट्रो फाइबर कम्पनी लि0, बैकांक ।
 § 1 V § मेसोनाइट अफ्रीका लि0, साउथ अफ्रीका

3- नोटिस की एक प्रति निम्नलिखित निर्यात देशों को भी नई दिल्ली स्थित उनके उच्च योगो के माध्यम से भेजी गई थी ।

§ क § थाइलैंड § ख § साउथ अफ्रीका § ग § मलेशिया § घ § इटली और § ङ § पाकिस्तान ।

4- उपरोक्त घरेलू उत्पादकों, आयातकों और निर्यातकों को उसी दिन प्रश्नावली भी भेजी गई थी जिनसे 7 जून 1998 तक अपने जवाब प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था । नोटिस और प्रश्नावली के जवाब निम्नलिखित पक्षों से प्राप्त हुए :-

घरेलू उत्पादक

- § 1 § मै0 वेस्टर्न इंडिया प्लाईवुड्स, कन्नूर
 § 11 § मै0 जोली बोर्ड लि0, मुम्बई
 § 111 § मै § नेशनल बोर्ड लि0, बैंगलोर

आयातक

- § 1 § श्री दुर्गा इंटरप्राइजेज चेन्नई-600112
 § 11 § इंडो थार्ड इंटर प्राइजेज, चेन्नई-600040

निर्यातक

- § 1 § मै0 एग्रो लाईन्स कम्पनी लि0, बैकांक- थाइलैंड ।

5- नोटिस का जवाब निम्नलिखित द्वारा भी प्रस्तुत किया गया है :-

- § क § मै0 महावीर मिरर इंडस्ट्रीज, चेन्नई-600003-
 § ख § मै0 सिस्टम बिल्डिंग टेक्नोलॉजिस्ट्स, नई दिल्ली ।
 § ग § मै0 सेजपाल एंड अदर्स, मुम्बई-400057

6. जांच के लिए आवश्यक समझी गई सूचना का सत्यापन किया गया और इसके लिए अधिकारियों की एक टीम ने मै० नेशनल बोर्ड गुवाहटी, मै० जोली बोर्ड लि० मुम्बई, मै० वेस्टर्न इंडिया प्लाईवुड लि० कन्नूर, मै० महावीर भिरर इंडस्ट्रीज चेन्नई और मै० इंडो थार्ड इंटर प्राइजेज, चेन्नई के परिसरों का दौरा किया। सत्यापन के परिणाम से संबंधित पक्षों को अवगत करा दिया गया था।

7. एक सार्वजनिक सुनवाई भी दिनांक 25.9.98 को आयोजित की गई थी जिसके लिए सभी इच्छुक पक्षों को दिनांक 28.8.98 को नोटिस भेजा गया था। सार्वजनिक सुनवाई में पक्षों द्वारा प्रस्तुत सूचना को 6 अक्टूबर 1998 तक महानिदेशक {रक्षोपाय} के कार्यालय में लिखित रूप में प्रस्तुत करने के लिए सभी पक्षों को कहा गया था और अन्य पक्षों द्वारा प्रस्तुत लिखित जवाबों की प्रति 7 अक्टूबर 1998 को प्राप्त करने के लिए कहा गया था इसके लिए खंडन, यदि कोई हो, को भी 26 अक्टूबर 1998 तक प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था।

ख. घरेलू उत्पादकों के दृष्टिकोण :-

8. घरेलू उत्पादकों ने निम्नलिखित मुख्य मुद्दे उठाए हैं :-

क. नेशनल बोर्ड लि० बेंगलूर.

§ 1 § वे हार्डबोर्ड के विनिर्माता हैं जिसे कि हार्ड डोसटी फाइबर बोर्ड के रूप में भी जाना जाता है जो आई एस आई मापदण्डों {आई एस 1658-1977} के अनुरूप डाइ प्रक्रिया द्वारा विभिन्न मापदण्डों/विवरणों के {ए श्रेणी} अनुरूप है। पानिखेयती गुवाहटी में उनका संयंत्र स्टैंडर्ड हार्डबोर्ड के विनिर्माण के लिए स्थापित किया गया है जिसके लिए उनके पास आवश्यक औद्योगिक लाइसेंस है।

§ 1.1 § उनका उत्पाद दीवार और सीलिंग लाईनिंग, पेनलिंग्स, पार्टिशन, फर्नीचर, स्लेट, चाकबोर्ड, टेलीवीजन, रेडियो बैक, आटो-मोबाइल कारवां, रेल कोच, इंदिरियर, फ्लश डोर फेशिंग और प्रदर्शनी कार्यो आदि में प्रयोग होता है।

§ 1.1.1 § वे केवल "ए" श्रेणी वाली गुणवत्ता के हार्डबोर्ड का विनिर्माण और विक्रय करते हैं।

§ 1.4 § चूंकि आयातित बी और "सी" श्रेणी के हार्डबोर्ड का उनके "ए" श्रेणी हार्ड बोर्ड से विभेद नहीं किया जा सकता, उपभोक्ता आयातित हार्डबोर्ड को उनके उत्पाद के स्थान पर प्रयोग कर रहे हैं।

§ 1.5 § आयातित उत्पाद और उनका उत्पाद एक समान है।

§ 1.6 § मई-जुलाई 1997 के दौरान हुए अत्याधिक आयात के कारण लाभ में कमी और उत्पादन में कटौती के कारण उन्हें अपने श्रमिकों को हटाना पड़ा और कुछ दिनों के लिए अपना कार्य बंद करना पड़ा। ठेके के श्रमिकों सहित कुल 24824 श्रम दिनों की हानि हुई।

§ 1.1.1 § निर्यातकों द्वारा कीमतें कम कर दिए जाने के कारण उनकी बिक्री प्राप्ति पर्याप्त मात्रा में घट गई। अप्रैल/जून 1997 में उत्पाद शुल्क सहित 10426 रु./मी.टन का बिक्री मूल्य जनवरी/मार्च 1998 में 10151 रु./मी.टन तक गिर गया और तब से गिरावट की प्रवृत्ति को दर्शाया है।

§ 14 § उनका भंडारण 1996-97 में 120 मी.टन की तुलना में 1997-98 में 650 मी.टन तक बढ़ गया

§ 15 § वित्तीय वर्ष 1997-98 के दौरान हार्ड बोर्ड के आयात में अचानक वृद्धि हुई जिसके कारण उन्हें आयातकों को अपने एक तिहाई मार्केट शेयर की हानि हुई ।

§ 16 § भारतीय बाजार में हार्ड बोर्ड की अत्यधिक मात्रा आने के साथ-साथ आयातित हार्डबोर्ड की उतराई के समय की लागत में भी 91.22 ₹0 प्रति शीट से 83.91 ₹0 प्रति शीट § सोमा शुल्क सहित § को उत्तरोत्तर कमो आ गई । ये दरें उनकी एक्स मिल मूल्यों से कम थी ।

§ 17 § अंतर्राष्ट्रीय हार्डबोर्ड तीन श्रेणियों ए, बी और सी में विनिर्मित किया जाता है जबकि कम्पनी केवल "ए" श्रेणी के हार्डबोर्ड का विनिर्माण करती है ।

§ 18 § भारत में आयातित अधिकांश हार्डबोर्ड बी और सी श्रेणी एवं आफ कट प्रकार का था । आयातित माल की ये कथित श्रेणियाँ उनके उत्पाद के साथ तुलनीय हैं और इनके बीच विभेद नहीं किया जा सकता । उनके उपभोक्ता उनके उत्पाद के स्थान पर आयातित हार्डबोर्ड का उपयोग कर रहे थे जो कि उन्हें गम्भीर क्षति पैदा कर रहा है ।

§ 19 § थाइलैंड से किए जाने वाले आयातित हार्डबोर्ड की कीमत 35/ आयात शुल्क देकर भी भारतीय उत्पाद की विद्यमान मूल्यों से 50/ कम थी । एक लाभ के रूप में थाई मुद्रा के अवमूल्यन के अलावा भारतीय विनिर्माताओं की 4000 मी.टन प्रतिमाह की क्षमता के मुकाबले थाइलैंड की चार हार्डबोर्ड मिलें 17000 मी.टन प्रतिमाह का उत्पादन कर रही हैं । कम घरेलू माँग के साथ-2 विशाल क्षमता और इसकी अधिकतम उपयोगिता ने उन्हें § थाई विनिर्माता § अपने उत्पाद को बहुत कम लाभ पर कम कीमत पर बेचने के लिए बाध्य कर दिया जिसका भारतीय निर्माताओं पर प्रतिकूल असर पड़ा है ।

§ 20 § समायोजन योजना के रूप में, उन्होंने सांगली में 15 करोड़ की कुल लागत पर 30000 मी.टन तक की क्षमता विस्तारित करने/वृद्धि करने के लिए एक सयंत्र शुरू किया जो कि लगभग पूरा हो गया है । सांगली महाराष्ट्र में अपने नए सयंत्र में लागत में कमी करने के उद्देश्य से हार्ड बोर्ड के निर्माण हेतु फायरवुड के स्थान पर बैगास को कच्चे माल के रूप में प्रयोग करने जा रहे हैं ।

§ 21 § आल इंडिया फाइबर बोर्ड मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन :-

§ 22 § आयातक का यह तर्क कि नेशनल बोर्ड द्वारा विनिर्मित हार्ड बोर्ड हार्ड बोर्ड नहीं है, सत्य नहीं है। यह दोहराया गया है कि चाहे एक ओर से चिकना हो या दोनों ओर से, नेशनल बोर्ड द्वारा विनिर्मित हार्ड बोर्ड हार्ड-बोर्ड ही रहेगा । हार्ड बोर्ड के विनिर्माण के लिए दो तरीके हैं, यथा गीली प्रक्रिया और शुष्क प्रक्रिया। डब्ल्यू आई पी और जे बी एल गीली प्रक्रिया का प्रयोग करते हैं और नेशनल बोर्ड शुष्क प्रक्रिया का प्रयोग करता है । वास्तव में गीली प्रक्रिया में निकलने वाले अवशिष्ट द्वारा उत्पन्न प्रदूषण समस्या के कारण इसके मुकाबले शुष्क प्रक्रिया नवीनतम एवं उच्च प्रक्रिया है । नेशनल बोर्ड उद्योग को जारी किया गया लाइसेंस हार्ड बोर्ड के विनिर्माण के लिए है । सालों तक नेशनल बोर्ड द्वारा भुगतान की गई उत्पाद शुल्क इयूटी हार्ड बोर्ड वर्गीकरण के अधीन है । राज्य/केन्द्र सरकारों एवं अन्य निगम प्राधिकारियों से संबंधित सभी दस्तावेजों में बिक्री कर या अन्य उद्ग्रहण हेतु उनके उत्पाद को हार्डबोर्ड के रूप में संदर्भित किया गया है । आईएसआई प्रमाण-पत्र भी हार्ड बोर्ड के नाम से ही है ।

§ 111 § आयातकों द्वारा उल्लेख किया गया है कि नेशनल बोर्ड लि० द्वारा विनिर्मित हार्ड बोर्ड का प्रयोग केवल स्लेटों के विनिर्माता ही करते हैं, सत्य नहीं है। स्लेट उद्योगों को नेशनल की कुल बिक्री 15/20/ हो होती है। उनकी शेष बिक्री राईटिंग पेड, परीक्षा पेड, लेमिनेशन, फोटोफ्रेम आदि के निर्माण के लिए होती है।

§ 111 § हार्ड बोर्ड की सभी प्रासंगिकताओं में, स्लेट निर्माण को छोड़कर, जो कि राष्ट्रीय बिक्री का 15/20/ है, थाइलैंड से आयातित हार्डबोर्ड नेशनल हार्ड बोर्ड के साथ बहुत अधिक प्रतिस्पर्धी है। विशाल आयात के कारण नेशनल हार्ड बोर्ड बहुत अधिक प्रभावित इकाई है।

§ 1V § कुछ वस्तुओं की विभिन्न व्याख्याओं और डब्ल्यू आई पी के मामले में बहु उत्पाद विनिर्माण के कारण विभिन्न शोषों की लागतों के आवंटन पर राय में अन्तर के कारण महानिदेशालय § रक्षोपाय § के अधिकारियों ने यह महसूस किया कि कुछ हद तक डब्ल्यू आई पी और नेशनल की लागत बढ़ चढ़ कर कही गई है।

§ V § भारतीय बाजारों में अत्याधिक आयात के प्रारम्भ होने के साथ भारतीय उद्योगों के अपने स्टॉक में वृद्धि होने लगी और उन्हें अपना उत्पाद कम करने हेतु बाध्य होना पड़ा। आयातित और देशी हार्ड बोर्ड की अवतरण लागत में और बजट पश्चात सीमा शुल्क में 10/ को वृद्धि के बावजूद 8"x4"x3 एम एम, पर 28/, 2"x4"x3 एम एम पर 41/ और निरस्त हार्डबोर्ड पर 100/ का अभी भी अन्तर है। आयातित हार्ड बोर्ड चाहे यह किसी भी रूप में आया हो जैसे बी श्रेणी, सी श्रेणी, निरस्त हार्डबोर्ड, आफकट्स और स्क्रेप की अवतरण दर न केवल देशी हार्ड बोर्ड की लागत से कम है बल्कि उनके बीच पर्याप्त अन्तर है। यदि यही अन्तर बना रहा तो घरेलू उद्योगों को भारत में आयातित हार्डबोर्ड चाहे वह किसी रूप में आया हो जैसे बी श्रेणी, सी श्रेणी बेकार हार्डबोर्ड, आफकट्स साइज या अन्य श्रेणी आदि के साथ प्रतिस्पर्धा करना मुश्किल होगा।

§ VI § वेस्टर्न इंडिया में क्षमता उपयोगिता में गिरावट पूर्णतया भारत में हो रहे विशाल आयात के कारण है। कम क्षमता उपयोगिता के बावजूद आयातित हार्डबोर्ड की मात्रा के समान घरेलू विनिर्माताओं का स्टॉक बढ़ा है। यह तथ्य, आयात और गिरते उत्पादन, क्षमता उपयोगिता और घरेलू उद्योगों की बिक्री के साथ सम्बन्ध को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

§ VII § हार्डबोर्ड मैनुफैक्चरर्स एसोसियेशन द्वारा किसी भी समय यह नहीं बताया गया कि केवल आटोमोबाइल सेक्टर द्वारा ही 8"x4" प्रकार का हार्ड बोर्ड प्रयोग किया जाता है। वास्तव में भारत में हार्डबोर्ड के अधिकतर उपभोक्ता 8"x4" और 6"x4" साइज के हार्ड बोर्ड खरीदते हैं और फिर वे इसे अपनी आवश्यकता के अनुरूप काटते हैं।

§ VII § यह कहना सत्य नहीं है कि आटोमोबाइल सेक्टर ने आयातित हार्ड बोर्ड का प्रयोग नहीं किया। मयूर इंडस्ट्रीज और आटो इंटीरियर प्रा० लि०, जो कि आटोमोबाइल उद्योग के दो बड़े विक्रेता हैं, ने हार्डबोर्ड का कई परेपण केवल आटो उद्योग को सप्लाई करने हेतु आयात किया है।

§ IX § किसी भी समय हार्ड बोर्ड की कोई कमी नहीं रही है, जैसा कि आयातकों का आरोप है। हार्डबोर्ड विनिर्माण एक निरन्तर प्रक्रिया है और प्रतिवर्ष सयंत्र को वार्षिक रखरखाव, बायलर निरीक्षण, हेतु बंद करना

पड़ता है, इसी अवधि के दौरान बाजार में हार्डबोर्ड की सप्लाई में व्यवधान हुआ। इस अवधि के दौरान वेस्टर्न इंडिया और जे बी एल ने अति सावधानी से अपने सभी नियमित डीलरों को उनके द्वारा पूर्व में लिए गए हार्ड बोर्ड के अनुसार अपने उत्पाद का फ्री और न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित किया और परिस्थिति से लाभ उठाने हेतु किसी आर्कस्मिक तवर्य "फेयर वेदर डीलर" को अनुमति नहीं दी। इसलिए हार्ड बोर्ड को कमी का आरोप आफकट्स और बेकार हार्डबोर्ड के आसान आयात को न्यायसंगत ठहराने के खेल के अलावा कुछ नहीं है।

§×§ 2"×4" हार्डबोर्ड की दरें कभी भी 8"×4" के आकार की दरों के समानुपाती नहीं रही और यह स्टैंडर्ड श्रेणी की दरों से कम रही है जैसाकि स्वयं एग्रोलाइन्स द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों से प्रमाणित है कि जहाँ 8"×4" की कीमत 1.45 अमरीकी डालर है वहीं 2"×4" की कीमत 0.33 सेंट रही जो कि 8"×4" की 1.32 यू एस डालर के बराबर है। बी श्रेणी, सी श्रेणी, आफ कट्स, निरस्त हार्ड बोर्ड और स्केप में मूल्यों की कमी देशी उद्योग को समाप्त कर रही है। भारतीय उपभोक्ता हमेशा 8"×4" और 6"×4" आकार का देशी हार्ड बोर्ड प्रयोग कर रहे हैं और इसे अपनी आवश्यकता के अनुरूप काटते हैं। बेतुकी कम दरों पर आयात किया जा रहा है जो कि घरेलू उद्योगों का नाश कर रहा है और यदि भारतीय उद्योगों को बचाना है तो इसे निष्फल करना होगा। आज भी भारत में 1.20 यू एस डालर से 1.45 यू एस डालर की रेंज में 8"×4"×3" एम एम की शोट के हार्डबोर्ड का आयात किया जा रहा है।

ग. निर्यातकों के दृष्टिकोण :

9. निर्यातकों ने निम्नलिखित मुख्य मुद्दे उठाए हैं :-

एग्रोलाइन्स कम्पनी :

§1§ मै0 एग्रोलाइन्स कम्पनी थाइलैंड, सन हुआ सेंग ग्रुप §एस एच एस§ द्वारा नियंत्रित कम्पनी है जिसकी स्थापना 1992 में अच्छे हार्ड बोर्ड के घरेलू और समुद्र पार मांग को पूरा करने के उद्देश्य से की गई थी।

§11§ 1992 से 1996 के दौरान उनके उत्पादन का 90% घरेलू खपत के लिए था। शेष को इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपीन्स, फिजी, जापान, पापुआ, न्यूगुयाना आदि देशों को निर्यात किया गया।

§111§ वित्तीय संकट से उत्पन्न आर्थिक विवशता के कारण उत्पाद की घरेलू मांग कम हुई है और यह कम्पनी मद सं. 11 पर उल्लिखित देशों के अलावा ताईवान, हांगकांग, श्रीलंका, मक्रोनेशिया, आईसलैंड, ब्रूने और भारत आदि जैसे नये बाजार में निर्यात करने की उम्मीद करती है।

§IV§ वे हार्ड बोर्ड को एस एस कोड 4411.11 §441111005§ के अधीन निर्यात करते हैं। यह लकड़ी का फाइबर बोर्ड/ विभिन्न आकारों के 800 किग्रा/क्यूबिक मी. टन से अधिक सघनता के अन्य काष्ठीय माल और वर्गीकरणों वाला हार्डबोर्ड है। उनके द्वारा विनिर्मित हार्डबोर्ड का प्रयोग निर्माण माल, फर्नीचर माल, पैकिंग में, लेमिनेशन हेतु औद्योगिक प्रयोग और श्रवण यंत्र विनिर्माताओं आदि के प्रयोग हेतु होता है।

§ V § उनके पास 48000 मी.टन प्रति वर्ष की क्षमता है जिसके मुकाबले उन्होंने क्रमशः 1996, 1997, 1998 में 37492 मी.टन, 42777 मी.टन और 44932 मी.टन का उत्पादन किया। कथित अवधि के दौरान उनकी उपयोगिता क्षमता क्रमशः 78.11%, 89.10% और 93.61% रही।

§ VI § 4"×8"×3 एम एम के आकार की शीट की उनके उत्पादन की लागत निम्नानुसार रही :-

1996	63.39	बाहत
1997	43.00	बाहत
1998	38.03	बाहत
1999	38.03	बाहत

§ VII § 1220×2440×3 एम एम 8"×4"×3 एम एम के प्रकार के हार्ड बोर्ड की एक इकाई की उनकी निर्यात बिक्री कीमत निम्नानुसार रही-

1996	2.96	अमरीकी डालर
1997	2.10	अमरीकी डालर
1998	1.80	अमरीकी डालर

§ VIII § भारत में उनके दो एजेंट है यथा : मै0 श्री दुर्गा इंटर प्राइजेज, चेन्नई-600012 और मै0 केल्वो कारपोरेशन, चेन्नई-600010.

§ IX § एग्रो लाइंस कम्पनी द्वारा सप्लाई किये गये हार्ड बोर्ड के मामले में सो आई एफ मूल्यों में कमी, 1997 के बाद यू एस डालर के मुकाबले थार्ड बाहत की विनिमय दर में स्पष्ट कमी के कारण है। यह स्थिति लम्बी अवधि में विकसित हुई अर्थात् 1997 के दूसरी छमाही और 1998 की प्रथम छमाही के बीच का समय प्राकृतिक रूप से आर्थिक और बाजार को बढ़ाने की प्रक्रिया थी। और यह निर्यातक कम्पनियों को बचाने की दृष्टि से निर्यातक देशों की सरकारों द्वारा उत्पन्न कृत्रिम स्थिति या हस्तक्षेप का परिणाम नहीं था।

§ X § मूल्यों में कमी कुछ आर्थिक विकास का परिणाम था और क्षेत्र में अन्य देशों के साथ थार्ड कम्पनियों द्वारा अपनाये गये सामान्य मूल्य प्रणाली को एग्रो लाइंस कं0 लि0 द्वारा अपनाए जाने में कुछ भी असामान्य नहीं था। इसके अतिरिक्त किसी समय में थाइलैंड में बेचे गए हार्ड बोर्ड के मूल्य भारत में निर्यातित हार्ड बोर्ड के मूल्य से कम थे।

§ XI § 4"×2" आकार की शीट के विनिर्माण से कोई विशिष्ट प्रक्रिया सीमा या लागत सोपान नहीं है। फिर भी विनिर्माता विनिर्माण और नौ परिवहन सुविधाओं, लागत लाभ आदि कारणों से 8"×4" की शीट सप्लाई करने की अधिमन्यता देते हैं। एग्रोलाइंस कम्पनी लि0 द्वारा प्रस्तुत की गई हार्ड बोर्ड शीट के छोटे आकार की शीट, अर्थात् 4"×2" आकार की शीट की कीमत 8"×4" की शीट की कीमत के अनुरूप है या अधिकांश मामलों में तुलना में अधिक है। इसलिए भारतीय विनिर्माता इस संबंध में किसी तरह से नुकसान में नहीं है।

§×III§ यह एक तथ्य है कि एग्रोलाइस कम्पनी लि० द्वारा बेचे गए हार्डबोर्ड के सम्बन्ध में पिछले वर्ष के दौरान आयात की कीमत तेजी से कम हुई है। अवधि के दौरान मूल्य व्यापक रूप में अस्थिर रहे क्योंकि बाजार में उपलब्ध कुछ देशों निर्मित माल की तुलना में वर्ष §1998§ की तुलना में भारतीय बाजार में विशेषतः पेपर क्लिपिंग बोर्ड और फोटो फ्रेम हेतु मोसमी मांग के कारण माल की विभिन्न निम्न श्रेणियाँ स्वीकार्य थी। इस अवधि के दौरान श्रेणी बी और श्रेणी सी की पर्याप्त मात्रा के साथ-साथ श्रेणी आर §निरस्त श्रेणी§ एग्रोलाइस कम्पनी लि० से आयात किया गया था क्योंकि रुपये हेतु इसकी कीमत के कारण इन कमियों के साथ हार्डबोर्ड की ये श्रेणियाँ भारतीय बाजार में स्वीकार्य पाई गई थी।

§×III§ वर्तमान में 8"×4" की शीट की दरें 1.70 यू एस डालर से 1.75 यू.एस डालर प्रति शीट §8"×4"§ है। इसमें कोई शक नहीं है कि मूल्य इस वर्ष से पूर्व सप्ताई किए जाने वाली दरों की तुलना में उच्च स्तर पर कम या ज्यादा स्थिर है। यू एस डालर के मुकाबले धाई बाह्य के मजबूत होने और उस देश में आर्थिक स्थिति में सामान्य सुधार के कारण ऐसा कोई कारण विश्वसनीय प्रतीत नहीं होता है कि निकट भविष्य में कीमते और कम होंगी और परिणामस्वरूप रक्षोपाय उपायों के लिए कोई औचित्य नजर नहीं आता।

§×IV§ विभिन्न उत्पादों के अंतिम उपभोक्तों के हित को ध्यान में रखना है, इसलिए भारत सरकार ने 1991-92 में उदारीकरण प्रक्रिया शुरू होने के पश्चात आयात शर्तों के साथ सीमा शुल्क ड्यूटी में भी छूट प्रदान की है। सरकार द्वारा अपनाया गया यह सोचा समझा निर्णय भारत को बाजार उन्मुख अर्थव्यवस्था की ओर ले जाना है जो कि तब से विद्यमान आश्रित अर्थव्यवस्था में असमानताओं को ठीक करेगा। दूरगामी रूप में यह भारतीय उत्पादों की गुणवत्ता व क्षमता आदि में उच्च स्थान तक पहुंचाने में सहायक होगा जिससे पर्याप्त निर्यात से देश के लिए आय प्राप्त होगी।

§×V§ भारत सरकार ने 1998-99 बजट में हार्ड बोर्ड और एम डी एफ पर मूल सीमा शुल्क ड्यूटी को 10% तक बढ़ा दिया है। इस वृद्धि का समग्र प्रभावी प्रभाव लगभग 14% के आसपास होता है। यू एस डालर की तुलना में भारतीय रुपये में गिरावट के कारण आयात लागत में वृद्धि के साथ सीमा शुल्क ड्यूटी में वृद्धि से पिछले एक वर्ष के दौरान आयात लागत में लगभग 27-28% तक की वृद्धि हुई है, जहाँ तक हार्ड बोर्ड का संबंध है।

§×VI§ हार्ड बोर्ड के आयात पर और अधिक शुल्क का बोझ नहीं लाया जाना चाहिए और दूसरी ओर 1998 के पहले के स्तर की स्थिति पर विचार करने हेतु, मुख्यतः भारत की जो जनसंख्या निम्न आय वर्ग से संबंधित है और जो इस उत्पाद के अंतिम उपयोगकर्ता हैं, उनके हित में हार्ड बोर्ड पर सीमा शुल्क ड्यूटी बढ़ायी नहीं जानी चाहिए।

घ. आयातकों के दृष्टिकोण

10. आयातकों/उपयोगकर्ताओं ने निम्नलिखित मुख्य मुद्दे उठाए हैं :-

§क§ मैसर्स महावीर भिरर इंडस्ट्रीज, चेन्नई - 600003.

§ 1.1. आल इंडिया फाइबर बोर्ड मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन द्वारा प्रस्तुत यह आवेदन पूरी तरह भ्रामक है और घरेलू उत्पादकों द्वारा उत्पन्न किए गए एकाधिकार बातावरण का लाभ उठाने के उद्देश्य से है। हार्ड बोर्ड का आयात, एकाधिकार की प्रवृत्ति और घरेलू उत्पादकों द्वारा शोषण से संघर्ष का परिणाम था।

§ 1.1.1. नेशनल बोर्ड्स लि. § एनबीएल § ऐसे हार्ड बोर्ड का विनिर्माण नहीं कर रहा है जिससे कि आयात किए जाने वाले हार्डबोर्ड के बराबर माना जा सके। एनबीएल की क्षमता उपयोगिता और एनबीएल से संबंधित अन्य तथ्य जो कि रक्षोपाय शुल्क के अधिरोपण के लिए प्रस्तुत किए गए हैं उनकी कोई प्रासंगिकता नहीं है।

§ 1.1.1.1. आयातित हार्ड बोर्ड, मै. वेस्टर्न इंडिया प्लास्वुड द्वारा विनिर्मित उत्पाद से निम्न श्रेणी का है लेकिन गुणवत्ता में यह मै. जोली बोर्ड के उत्पाद के समान है। एनबीएल के उत्पाद के समान किसी भी हार्ड बोर्ड का आयात नहीं किया जा रहा है।

§ 1.1.1.2. हार्ड बोर्ड की सभी श्रेणियों को हार्ड डेसिटी फाइबर बोर्ड नहीं कहा जा सकता। हार्ड बोर्ड में कई प्रकार के बाह्य पदार्थ पाये जाते हैं जो कि हार्ड डेसिटी फाइबर बोर्ड और मीडियम डेसिटी फाइबर बोर्ड में नहीं होते।

§ 1.1.1.3. देशी उत्पाद की तुलना में आयातित हार्ड बोर्ड की गुणवत्ता इस प्रकार की है कि इसका प्रयोग, उच्च पानी सपट के कारण, आटोमोबाइल उद्योग द्वारा भी निरस्त कर दिया गया है।

§ 1.1.1.4. हार्ड डेसिटी फाइबर बोर्ड, मीडियम डेसिटी फाइबर बोर्ड, मेसोनाइट बोर्ड आदि की सभी श्रेणियों को शामिल करते हुए घरेलू उत्पादकों ने आयात के अतिशयोक्तिपूर्ण आंकड़े प्रस्तुत किये हैं।

§ 1.1.1.5. हार्ड बोर्ड के आयात के संबंध में आंकड़े प्रक्षेपण के आधार पर प्रस्तुत किए गए हैं न कि वास्तविक आधार पर। घरेलू उत्पादन की कुल मात्रा की तुलना में भारत में आयातित हार्ड बोर्ड की मात्रा बहुत कम है।

§ 1.1.1.6. जोली बोर्ड और वेस्टर्न इंडिया प्लास्वुड द्वारा विनिर्मित हार्ड बोर्ड अपनी विशेषताओं के अनुसार भिन्न-भिन्न हैं जैसा कि उनके बाजार के उत्पादन के मूल्यों में अन्तर से भी प्रमाण मिलता है।

§ 1.1.1.7. घरेलू विनिर्माताओं को भी और सी श्रेणी के माल के आयात पर कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए, क्योंकि वे केवल प श्रेणी के हार्ड बोर्ड के विनिर्माण का दावा करते हैं।

§ 1.1.1.8. घरेलू उत्पादकों वेस्टर्न इंडिया प्लास्वुड और जोली बोर्ड ने एक दूसरे से गुप्त सहयोग से एकाधिपत्य स्थापित किया और ऊँचा मूल्य स्तर बनाए रखा। 1994-95 से 1996-97 के दौरान केवल 193 मी. टन के हार्ड बोर्ड के उत्पादन में वृद्धि हुई। जो कि स्वयं प्रदर्शित करता है कि वे माँग में वृद्धि की ओर कभी जागरूक नहीं रहे बल्कि उन्होंने नियमित अंतराल के पश्चात मूल्य बढ़ाने को महत्व दिया।

(X1) घरेलू विनिर्माताओं ने आयतित हार्डबोर्ड की उतराई के समय लागत की गलत गणना की है उन्होंने लाइसेंस खर्च, बैंक चार्ज सी एंड एफ पोर्ट ट्रस्ट चार्ज आदि को छोड़ दिया है जो उतराई के समय सही लागत के आंकलन हेतु लगभग 10% अतिरिक्त बैठता है। इसके अलावा उतराई के समय की कम लागत को दर्शाने हेतु उन्होंने स्टैंडर्ड साइज हार्डबोर्ड के स्थान पर सभी कट और आफ साइज हार्डबोर्ड को शामिल कर लिया है।

§×11§ मूल्यों में कमी नहीं : अधिक वितरकों की आकस्मिकता और उनके बीच समुद्रपार प्रतिस्पर्धा के कारण मूल्यों में कमी हुई।

§×111§ घरेलू विनिर्माताओं द्वारा उत्पादन की भ्रामक लागत प्रस्तुत करना। देशी हार्डबोर्ड की बिक्री की लागत ₹0 13910 प्रति मी.टन अतिशयोक्तिपूर्ण है। मूल्यहास और न्याज लागत को ध्यान में नहीं रखना चाहिए क्योंकि संयंत्र 30-40 वर्ष पुराने हैं और उनका अर्जित संचय काफी संतोषजनक है और घरेलू उत्पादकों §डब्ल्यू आई पी, जे बी§ ने विचाराधीन अवधि के दौरान अच्छा लाभ प्राप्त किया है। वास्तव में वे कुछ मरम्मत और रखरखाव सम्बन्धी कार्य हैं जो कि उत्पादन की लागत को प्रभावित नहीं करते।

§×1V§ घरेलू उत्पादक §डब्ल्यू आई पी§ अपने उत्पादन की 1/3 निर्यात करते थे। क्षमता उपभागिता में गिरावट कम निर्यात के कारण है। परिणाम के रूप में संयंत्र बंद होना और श्रम कमी अन्य असंगत कारणों के कारण है न कि आयात के कारण।

§×V§ क्षमता में विस्तार उत्पाद की लागत को कम नहीं करेगा बल्कि क्षमता उपयोगिता सर्वोच्च होगी। बजट के पश्चात §1998-99§ आयतित हार्डबोर्ड की बिक्री की उतराई के समय की लागत बजट पूर्व लागत की तुलना में 12.12% अधिक है। 1998-99 के बजट के पहले आयात की लागत लगभग 13834/- रुपये बैठती है जो कि घरेलू उत्पादन की बिक्री की लागत के बराबर है।

§×VI§ सभी आयातों पर 8% अतिरिक्त शुल्क के अधिरोपण और मूल सीमा शुल्क के 30% से 40% बढ़ाए जाने के साथ-साथ सीमा शुल्क ड्यूटी जोड़कर उतराई के समय की लागत पर 42.66% रक्षोपाय ड्यूटी के अधिरोपण के लिए निवेदन का प्रश्न नहीं उठता क्योंकि मूल्यों पर या घरेलू उत्पादकों की बिक्री की मात्रा पर कोई प्रतिकूल असर नहीं पड़ता।

§×VII§ यह सत्य नहीं है कि मे0 थार्ड प्लाई वुड §एक थार्ड सरकार के अधीन कम्पनी के रूप में उल्लिखित§ द्वारा सप्लाई की गयी आयतित हार्ड बोर्ड नेशनल बोर्ड्स लि0, गुवाहटी द्वारा विनिर्मित हार्ड बोर्ड के सदृश है। मे0 थार्ड प्लाई वुड द्वारा विनिर्मित बेंगना बोर्ड केवल एक ओर से चिकना है और दूसरी ओर से बिल्कुल परिष्कृत है। यह मे0 नेशनल बोर्ड लि0 जैसा नहीं है। यह मे0 वेस्टर्न इंडिया प्लाई वुड और मे0 जोली बोर्ड के द्वारा विनिर्मित हार्ड बोर्ड के समान है।

§×VIII§ भारत में वेस्टर्न इंडिया प्लाईवुड और जॉली बोर्ड हार्डबोर्ड के केवल दो स्थानीय निर्माता हैं।

§×IX§ एन बी एल का उत्पाद लेबन पैड के विनिर्माण के लिए प्रयुक्त नहीं होता क्योंकि एन बी एल के दोनों ओर से चिकने हार्डबोर्ड पर लेमिनेशन प्रभावी नहीं है। आगे फोटो फ्रेमिंग उद्योग में, हार्डबोर्ड की विषम सतह और एक ओर से नेट परिष्करण के कारण प्रिंटेड पेपर पिक्चर चिपकाने के पश्चात फिसल जाता है। एन बी एल का उत्पाद इन दो उद्योगों में अंतिम उपाय के रूप में प्रयुक्त होता है।

§××§ पन बी पल दारा शुष्क प्रक्रिया से उत्पादित उत्पाद थाईलैंड से आयाति हार्डबोर्ड से प्रतिस्पर्धा नहीं करता क्योंकि थाईलैंड में शुष्क प्रक्रिया से हार्डबोर्ड का विनिर्माण करने वाली कोई फैक्टरी नहीं है। इसलिए थाईलैंड से दोनों ओर से चिकने हार्ड बोर्ड के आयात का कोई प्रश्न नहीं है ।

§××।§ स्थानीय विनिर्माताओं ने उल्लेख किया है कि वे 50,000 मी.टन संयंत्र को विस्तारित करने जा रहे हैं। इस प्रकार के विस्तार के लिए और मांग के संबंध में घरेलू उत्पादकों द्वारा दिए गए समुचित सर्वेक्षणों और विश्वसनीय परियोजनाओं के आधार पर सरकार और वित्तीय संस्थाओं की स्वीकृति दी गयी होगी । यदि यह सत्य है तो भारतीय विनिर्माताओं को गुहार करने की आवश्यकता नहीं है जबकि भारत में आयातित हार्डबोर्ड की मात्रा लगभग 10,000 मी.टन है ।

§××।।§ 2-6-98 को घोषित किए गए केन्द्रीय बजट में आयातित हार्डबोर्ड, एम डी एफ बोर्ड और पार्टिकल बोर्ड पर आयात शुल्क 10/ बढ़ा दिया गया है जिससे कि सम्पूर्ण 11 प्रतिशत वृद्धि का प्रभाव होगा । फलस्वरूप हार्ड बोर्ड का आयात पूर्ण रूप में और यू एस डालर की तुलना में भारतीय रुपये में 8/ की कमी के कारण अव्यवहार्य हो जाता है । आयात की लागत में उपरोक्त वृद्धि के कारण, आयातकों को आयात पूर्ण रूप से बंद करने के लिए बाध्य होना पड़ा । केवल बजट से पहले बुक की गई परेषण ही प्राप्त की गई । अकेले मै0 फिटप्लाई उद्योग लि0 ने ही बजट के पश्चात विदेशी वितरकों से पूर्व प्रतिबद्धता के कारण हार्डबोर्ड का आयात किया ।

§×।।।§ घरेलू उत्पादकों ने 10/ तक अपनी कीमतें कम कर दी हैं जो कि आयात के कारण नहीं बल्कि बाजार में सामान्य मंदी के कारण है ।

§××।V§ जैसा कि आवेदन में दावा किया गया है यदि घरेलू संयंत्रों की क्षमता उपयोगिता में वृद्धि होती है तो श्रम फालतू होगा, समय में नहीं आता ।

§××V§ स्थानीय विनिर्माताओं के हार्ड बोर्ड के विक्रय मूल्य की तुलना में आयातित हार्ड बोर्ड के विक्रय मूल्य अधिक है ।

§××VI§ आयात से पूर्व, वितरकों को घरेलू विनिर्माताओं के समक्ष अक्षरशः भीख माँगनी पड़ती थी । 300 से 400 शीटों की मांग के विरुद्ध 50 शीटों से अधिक की सप्लाई नहीं की जाती थी । घरेलू विनिर्माताओं ने उनके स्वयं द्वारा उत्पन्न एकाधिकार स्थिति का लाभ उत्पादन न बढ़कर मांग में वृद्धि के साथ मूल्य वृद्धि करके उठाया । घरेलू विनिर्माताओं द्वारा उत्पन्न की गयी अकाल की स्थिति में हार्ड बोर्ड का आयात एक राहत के रूप में सिद्ध हुआ है ।

§ख§ मेसर्स श्री दूर्गा फ़्टरप्राइजेज चेन्नई - 600012-

मेसर्स महावीर मिरर इंडस्ट्रीज के समान उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए हैं ।

§ग§ मेसर्स इंडो थार्ड फ़्टरप्राइजेज, चेन्नई - 600040

§।§ आयातित हार्ड बोर्ड की पुर्तूचने के पश्चात् आंकी गई कीमत ठीक नहीं है तथा उसमें सी.एण्ड.एफ खर्च भी सम्मिलित नहीं है ।

§ 118 बी ग्रेड हार्ड बोर्ड की 4800 शीटों के आयात करने में सी.एण्ड.एफ., लदान/ माल उतारने का खर्चा लगभग 16000/-रु. से लेकर 18,000/-रु. या 3 रु. 75 पैसे प्रति शीट पड़ता है ।

§ 119 आंकी गई पहुँच लागत केवल शोभा जनक है । अधिकतर आयातक बाजार में संजीवता के कारण आयात कवर लेते हैं और इसीलिए डालर की निरंकुश कीमत अस्पष्ट तथा धोखा देने वाली है ।

§ 120 घरेलू उत्पादकों द्वारा प्रस्तावित रक्षोपाय ड्यूटी उपभोक्ता के हित में नहीं है । इससे उत्पादकों को संघ बनाने के लिए सहायता मिलेगी । यदि रक्षोपाय ड्यूटी लगाई जाती है तो यह एम.आर.टी.पी. के घरे में आ जाएगी ।

§ 121 रक्षोपाय-ड्यूटी लगाने से पहले उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में विशेषकर तथा देश के बाकी क्षेत्रों में साधारणतया प्लाईवुड आधारित उद्योग पर उच्चतम न्यायालय के निर्णय को ध्यान में रखा जाना चाहिए ।

§ 122 घरेलू कम्पनियाँ केनेलाइजिंग एजेंसी के रूप में कार्य कर सकती हैं, अथवा निर्यातक देशों के साथ आपसी बातचीत द्वारा कोई समझौता कर सकती हैं ।

§ 123 आयातित बी ग्रेड हार्ड बोर्ड घरेलू उत्पादकों द्वारा विनिर्मित हार्ड बोर्ड के समान है तथा वह एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग में लाया जा सकता है ।

§ 124 मैसर्स सिस्टम विटिंग टेक्नीलोजिस्ट्स एस.बी.टी. नई दिल्ली- 110019 तथा

§ 125 मैसर्स सेजपाल तथा अन्य, मुम्बई-400057.

§ 126 वे सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 4411.11 तथा 4411.19 के अन्तर्गत आने वाले डेन्सिफाइड वुड फाइबर प्लेट्स का आयात करते हैं जो दरवाजों के शटर बनाने के लिए काम आती हैं ।

§ 127 आयातित मव प्लेन शीट के रूप में न होकर साँचे की ढली हुई प्लेट्स के रूप में हैं जो कि विशेष रूप से फिनिशड डोर शटर के संयोजन के लिए प्रयुक्त होती हैं । आयातित माल देश में नहीं बनाया जाता ।

§ 128 भारत सरकार ने असाधारण वातावरण लाभ को ध्यान में रखते हुए स्थापित वास्तविक डोर शटर के संयोजन करने वालों के लिए "डेन्सिफाइड वुड फाइबर प्लेट" पर सीमा शुल्क भुगतान से छूट दे रखी है ।

§ 129 डोर शटर के लिए साँचे में ढली हुई डेन्सिफाइड वुड फाइबर प्लेटों से शीट अलग श्रेणी तथा बिल्कुल भिन्न प्रकार का मैटीरियल है ।

§ 130 घरेलू हार्ड बोर्ड उत्पादकों के रक्षोपाय शुल्क लगाने के आवेदन पर विचार करते समय डेन्सिफाइड वुड फाइबर प्लेट्स को शामिल नहीं किया जाना चाहिए ।

ड. महानिदेशक का निष्कर्ष

11. मैंने हार्डबोर्ड के घरेलू उत्पादकों आयातकों तथा निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत उत्तर तथा मामले के अभिलेखों को ध्यान पूर्वक देखा । विभिन्न पक्षों द्वारा प्रस्तुत विचार तथा उससे उत्पन्न विभिन्न मामलों को समुचित स्थान पर निम्न प्रकार से वर्णित किया गया है:-

§ 101. सम्बद्ध उत्पाद

§ 101. जाँच के अधीन उत्पाद 0.8 ग्राम/क्यूबिक सेंटीमीटर से अधिक घनत्व का हार्ड बोर्ड है जो कि सामान्य तौर पर सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की प्रथम अनुसूची के उप शीर्ष संख्या 4411.11 तथा 4411.19 और भारतीय व्यापार वर्गीकरण § आई.टी.सी. के 44111100 तथा 44111900 के अधीन वर्गीकृत किया जाता है। हार्ड बोर्ड शीट का एक पदार्थ है जो फाइबर के फेब्रिकेस तथा उसमें निहित चिपदार गुण से उत्पन्न प्राइमरी बाण्ड के साथ लिगनो सेल्यूलोसिक पदार्थ के फाइबर से निर्मित है। यह गीले और सूखे तरीके से उत्पादित किया जाता है। गीले तरीके में नीलगिरी और पनवुड चिपसों में से तांतों को अलग करके पानी में भिगो दिया जाता है और फिर वेट फोर्मिंग मशीन में पम्प कर दिया जाता है ताकि वह गीला रह सके। उसमें पैराफिन वैक्स तथा बाइन्डिंग रेसिन्स जैसे कैमिकल्स मिला दिए जाते हैं ताकि बोर्ड में पूर्व अवधारित गुण, समान क्वालिटी और बोर्ड में पानी सहन करने की क्षमता आ सके। पल्प को फार्मिंग मशीन के इनलेट में मिश्रित किया जाता है जहाँ पर अनन्त फाइबर मेट बन जाता है जिसे आगे के प्रसंस्करण के रूप में शीट में काट दिया जाता है। सूखी प्रक्रिया में चिप्स को स्टील सिलेंडर में उच्च भाप के दबाव में थोड़े समय के लिए रखा जाता है और उसके पश्चात् एक बाल्व को जल्दी से खोलकर तत्त्व को निकाल लिया जाता है। दबाव में एकदम कमी के कारण चिप्स फाइबर बंडल तथा फाइबर के रूप में आ जाते हैं। सूखे फाइबर को वायवीय प्रक्रिया द्वारा हेण्डल किया जाता है और ब्लोअर के जरिये फार्मिंग मशीन से भरण किया जाता है। फिर उसमें पर्याप्त रेजिन मिलाया जाता है तथा शीट को ताप और दबाव से दबाया जाता है। हार्ड बोर्ड ए.बी.सी. ग्रेड में उपलब्ध है जिसे अन्तरिक सजावट, फ्रेम बनाने, फर्नीचर बनाने, आटोमोबाइल के डोर ट्रिम और पैकेजिंग के लिए और ड्रम विनिर्माताओं द्वारा इस्तेमाल किया जाता है। घरेलू उत्पादक केवल ए ग्रेड का हार्ड बोर्ड ही बनाते हैं। हार्ड बोर्ड को आई.टी.सी. के 44112900 तथा 44119900 में भी वर्गीकृत किया जाता है।

§ 101. आई.एस.आई. § आई.एस. 1658-1977 विनिर्देशों के अनुरूप घरेलू उत्पादकों द्वारा सूखी और गीली प्रक्रिया द्वारा हार्ड बोर्ड का विनिर्माण किया जाता है। साधारणतया और अधिकतर 8'x4'x3 एमएम तथा 6'x4'x3 एमएम आकार का बनता है। फिर भी ग्राहक की माँग के अनुसार मोटाई तथा आकार भिन्न हो जाता है। वर्णित विशिष्टियों के अनुसार अधिकतर हार्ड बोर्ड उनके विनिर्माण के तरीके के अनुसार तथा अन्य संबंधित मकेनीकल तथा फिजिकल गुणों के अनुसार सामान्य रूप से निम्नलिखित तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किए गए हैं जैसे कि मध्यम हार्ड बोर्ड, स्टैंडर्ड हार्ड बोर्ड तथा टेम्पर्ड हार्ड बोर्ड। जाँच के अधीन उत्पाद स्टैंडर्ड हार्ड बोर्ड के दायरे के अन्तर्गत आएगा जो कि 0.8 ग्राम प्रति क्यूबिक सेंटीमीटर के घनत्व का होमोजीनियस फाइबर बिल्डिंग बोर्ड के रूप में परिभाषित किया गया है।

§ 101. स्टैंडर्ड हार्ड बोर्ड के अलावा डोर शटर के विनिर्माण के लिए डेन्सफाइड वुड फाइबर प्लेट भी आयात की जाती है जो कि सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1997 के अध्याय 4411.11 तथा 4411.19 के अन्तर्गत आते हैं। ये प्लेन शीट के रूप में नहीं होते बल्कि साँचे में ढली हुई प्लेट के रूप में होती है और विशेषकर "डोर शटर के संयोजन के लिए प्रयोग में लायी जाती है तथा सूचना के अनुसार भारत में इनका विनिर्माण नहीं होता है। इस विषय में घरेलू विनिर्माताओं द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों में आयात की मात्रा यदि कोई है तो शामिल नहीं की गयी है। इसीलिए इस कार्यवाही में उन्हें नहीं लिया गया है। इसी प्रकार मैसोनाइट बोर्ड भी इस कार्यवाही के अन्तर्गत नहीं लिया गया है।

§ 1V § सम्बद्ध उत्पाद का वर्गीकरण यथा हार्ड बोर्ड का सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 या आई.टी.सी. के अन्तर्गत वर्गीकरण मात्र सुविधा के लिए किया गया है तथा किसी भी प्रकार से वर्तमान जाँच के अधीन उत्पाद के विषय क्षेत्र से संबंधित नहीं है ।

§ ख § घरेलू उद्योग

हार्ड बोर्ड के घरेलू उत्पादकों की ओर से अखिल भारतीय फाइबर बोर्ड निर्माता एसोसिएशन ने प्रार्थना पत्र फाइल किया है । हार्ड बोर्ड के तीन उत्पादक माने जाते हैं जो कि सम्पूर्ण घरेलू उत्पादन करते हैं, इनके नाम हैं:- मैसर्स वेस्टर्न इंडिया प्लाइवुड लिमिटेड, कन्नूर डब्ल्यू.आई.पी., मैसर्स जॉली बोर्ड लिमिटेड जे.बी.एल., मुम्बई तथा मैसर्स नेशनल बोर्ड लिमिटेड एन.बी.एल. बेंगलोर । और ये सभी एसोसिएशन के सदस्य हैं । एन.बी.एल. शुष्क प्रक्रिया द्वारा हार्ड बोर्ड दोनों तरफ से चिकना बनाता है जब कि जे.बी.एल. और डब्ल्यू.आई.पी. गीली प्रक्रिया से हार्ड बोर्ड एक तरफ से चिकना और दूसरी तरफ से नेट फिनिश बनाते हैं। इसलिए यह समझा गया है कि प्रार्थना पत्र घरेलू उद्योगियों द्वारा फाइल किया गया है

§ ग § बढ़ हुआ आयात

वर्ष 1994-95 तक हार्ड बोर्ड का भारत में बिल्कुल भी आयात नहीं होता था । 1995 से हार्ड बोर्ड का भारत में थाइलैंड, दक्षिण अफ्रीका, इटली तथा पाकिस्तान से आयात किया जाता है । हार्ड बोर्ड पर 1994-95 में 65%, 1995-96 में 50% तथा 1996-97 और 1997-98 में 35% आयात शुल्क प्राप्त हुआ। 1998-99 के बजट में सीमा शुल्क दस प्रतिशत बढ़ा दिया गया । घरेलू उत्पादकों ने कहा है कि हार्डबोर्ड का आयात 1995-96 में 141.57 मीट्रिक टन, 1996-97 में 839.14 मी.टन तथा 1997-98 में 11227 मी.टन था । प्रार्थियों ने दावा किया है कि यह आंकड़े आयात के आंकड़ों के कुछ अंश ही हैं क्योंकि विशाखापट्टनम कांडला और झाई पोर्ट/आई सी डी में आयात के कुछ समय के आंकड़े जन समुदाय में उपलब्ध नहीं हैं । डी.जी.सी.आई.एन के आंकड़ों में हार्डबोर्ड सहित सभी प्रकार के फाइबर निर्माण बोर्ड के आयात के आंकड़े सम्मिलित हैं । आयातकों का आरोप था कि हार्डबोर्ड के आयात के जो आंकड़े घरेलू उत्पादकों द्वारा दिए गए हैं उसमें सभी प्रकार के हार्ड बोर्ड यहाँ तक कि विशेष प्रकार के फाइबर बोर्ड तथा मध्यम मुलायम बोर्ड भी शामिल हैं । फिर भी आयातकों ने यह सिद्ध नहीं किया है तथा न ही उस समय के, भारत में हार्डबोर्ड के आयात के प्रमाणिक आंकड़े ही प्रस्तुत किए हैं । आयातक घरेलू उत्पादकों द्वारा दिए गए आंकड़ों पर आश्रित थे । उन्होंने उन आंकड़ों में से कुछ उन फर्मों के आयात की मात्रा को कम करके जिन्होंने उनके अनुसार घरेलू उत्पादकों जैसा हार्डबोर्ड आयात नहीं किया था, के आंकड़ों को संशोधित कर दिए । प्रार्थियों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों को सत्यापित एवं समायोजित किया गया है ताकि जांच करने के लिए उनमें से हार्डबोर्ड के अतिरिक्त अन्य उत्पादों के आंकड़े निकाले जा सकें ।

तदनुसार वर्ष 1995-96 से 1997-98 तक हार्ड बोर्ड का आयात और घरेलू उत्पादन निम्न लिखित प्रकार से देखे गए :-

वर्ष	घरेलू उत्पादन ॥मी.टन॥	आयात ॥मी.टन॥	घरेलू उत्पादन के रूप में आयात का प्रतिशत
1995-96	43738	136.55	0.31
1996-97	45808	1734.18	3.78
1997-98	40858	9749.5	23.86

उपरोक्त सारणी के आंकड़ों से पता लगाता है कि आयात स्थिर रूप से 1995-96 में 136.55 मी.टन से 1997-98 में 9749.50 मी.ट. तक बढ़ा है जिससे कि लगभग 7040 प्रतिशत की बढ़त दर्ज हुई। घरेलू उत्पादन की प्रतिशतता के रूप में आयात का प्रतिशत 1995-96 में 0.31/ से बढ़कर 23.86 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार आयात स्थिर रूप में तथा घरेलू उत्पादन की तुलना में भी दोनों प्रकार से बढ़ा है।

॥प॥ क्षति

घरेलू उत्पादकों की स्थिति संबंधी विभिन्न मानदण्डों के संबंध में वास्तविक स्थिति निम्नलिखित प्रकार से सारणीबद्ध की गई है :-

वर्ष	स्थापित क्षमता ॥मी.टन॥	उत्पादन ॥मी.ट.॥	उपयोगिता क्षमता /	बिक्री ॥मी.टन॥	क्लोजिंग स्टॉक मी.टन
1995-96	57250	43738	76.04	44644	1637
1996-97	57250	45808	80.01	45175	2270
1997-98	57250	40858	71.37	38229	4899

उपरोक्त सारणी से यह देखा जा सकता है कि घरेलू उत्पादन जो कि वर्ष 1995-96 में 43738 मी.टन से वर्ष 1996-97 में 45808 मी.टन तक बढ़ गया था वह वर्ष 1997-98 में घटकर 40858 मी.टन रह गया। इस प्रकार उत्पाद में 10.80 प्रतिशत की कमी हुई। वर्ष 1995-96 में जो उपयोगिता क्षमता 76.4 प्रतिशत से वर्ष 1996-97 में 80 प्रतिशत बढ़ गई थी, वह वर्ष 1997-98 में घट कर 71.37 प्रतिशत रह गई थी। जो घरेलू बिक्री वर्ष 1995-96 में 44644 मी.टन से बढ़कर वर्ष 1996-97 में 45175 मी.टन तक चली गई थी, वह वर्ष 1996-97 में 38229 मी.टन रह गई और इस प्रकार 15.37 प्रतिशत का घटा रहा। फलस्वरूप 1996-97 में जो क्लोजिंग स्टॉक 2270 मी.टन था वह उसकी तुलना में 1997-98 में बढ़कर 4899 मी.टन हो गया। घरेलू उत्पादक यह कम बिक्री केवल कम कीमत पर ही कर सके। नेशनल बोर्ड ने अपना बिक्री मूल्य ॥उत्पाद शुल्क सहित॥ जो कि अप्रैल-जून, 1997 में औसतन 10426/-रु० प्रति मी.टन था को घटा कर जनवरी-मार्च, 1998 में 10151/- रु० प्रति मी.टन कर दिया। इसी प्रकार वेस्टर्न इंडिया का भी अक्टूबर-दिसम्बर, 1997-98 में औसतन बिक्री मूल्य 14804/- रु० प्रति मी.टन से घटकर जनवरी-मार्च, 1998 में 13981/-रु० प्रति मी.टन रह गया और जौली बोर्ड का औसत बिक्री मूल्य अक्टूबर 1997 में 14924/- रु० प्रति मी.टन से गिर कर जनवरी, 1998 में 13592/- रु० और मार्च, 1998 में 12376/-रु० प्रति मी.टन रह गया।

घरेलू उद्योग में रोजगार की भी कमी आई है। केवल नेशनल बोर्ड ने ही 1997-98 में 24824 मानव दिवस खोया। जॉली बोर्ड ने 3540 मानव दिवस खोया। इस प्रकार घरेलू उद्योग ने 1997-98 में 28364 मानव दिवस खोया।

इसलिए यह पाया गया कि घरेलू उद्योग को अपनी स्थिति में कुल मिलाकर महत्वपूर्ण हानि हुई है और इस प्रकार उसे गंभीर क्षति हुई है।

§ ड. § नैमित्तिक संबंध

जैसा कि ऊपर पाया गया है यद्यपि कुल मिलाकर घरेलू उद्योग को गंभीर हानि सहन करनी पड़ी है, इसलिए इसके कारणों का विश्लेषण करना आवश्यक है। घरेलू उत्पादकों में तीन विनिर्माता हैं जैसे नेशनल बोर्ड लिमिटेड § एन.बी.पल §, वेस्टर्न वुडिया प्लांट्स लि. § डब्ल्यू.आई.पी. § तथा जॉली बोर्ड लिमिटेड § जे.बी.पल §। एन.बी.पल. की स्थापित क्षमता 15000 मी.टन प्रतिवर्ष, डब्ल्यू.आई.पी. की 24,700 मी.टन प्रतिवर्ष तथा जे.बी.पल. की 17,550 मी.टन प्रतिवर्ष है। कुल मिलाकर घरेलू उद्योग की कुल 57,250 मी.टन वार्षिक स्थापित क्षमता है। 1996-97 में उत्पादन और क्षमता उपयोगिता क्रमशः 45808 मी.टन और 80.01/ के शिखर पर पहुँच गई थी, वर्ष 1997-98 में गिर कर 40858 मी.टन और 71.37/ रह गई। उसी समय स्पष्ट घरेलू उपभोग § घरेलू बिक्री तथा आयात § में सीमान्त वृद्धि हुई और वह 1996-97 में 46909 मी.टन से बढ़कर 1997-98 में 47979 मी.टन हो गई अर्थात् 2.28 प्रतिशत की वृद्धि हुई। फिर भी, घरेलू उत्पादकों ने स्पष्ट घरेलू उपभोग में 1996-97 में 45175 मी.टन से 1997-98 में 38229 मी.टन अर्थात् 6946 मी.टन के शेष का नुकसान उठाया। इस दौरान आयात 1996-97 में 1734.18 मी.टन से वर्ष 1997-98 में 9749.5 मी.टन बढ़ गया जो 8015.32 मी.टन की वृद्धि थी जिसने घरेलू बिक्री का स्थान ले लिया। घरेलू उत्पादकों ने कहा है कि आफ कट हार्डबोर्ड के आयात यानि 8'x4'x3 मि.मी./6'x4'x3 मि.मी. से कम और साधारणतया 2'x4'x3 मि.मी. के आकार के हार्डबोर्ड का आयात उस कीमत पर हुआ जो कि स्टैंडर्ड आकार की शीट यानि 8'x4'x3 मि.मी. की कीमत से कम थी और इस आयात ने उनके प श्रेणी के हार्ड बोर्ड का स्थान ले लिया है। वर्ष 1997-98 में 2'x4'x3 मि.मी. के आफ कट्स का आयात रु. 15.81 प्रति शीट यानि § रु. 63.24 प्रति शीट 8'x4'x3 मि.मी. § से हुआ जबकि 8'x4'x3 मि.मी. का सी. आई एफ. मूल्य रु. 79.68 प्रति शीट था और 6'x4'x3 मि.मी. का आयात 58.48 रु. प्रति शीट पर हुआ § यानि 77.97 रु प्रति शीट 8'x4'x3 मि.मी. §

भारतीय बाजार में कम कीमत पर हार्ड बोर्ड ने वर्ष 1997-98 में प्रवेश किया था। 8'x4'x3 मि.मी. के आकार की जिस शीट का जुलाई, 1997 में 2.4 अमरीकी डालर § 86 रु. 24 पैसे § प्रति शीट की दर से आयात किया गया था, अगस्त 1997 से नवम्बर 1997 के दौरान प्रवेश करने वाले आयात के लिए लगभग 2.3 अमरीकी डालर § 83 रु. 72 पैसे § प्रति शीट तक गिर गया। मार्च, 1998 तक की परवर्ती अवधि में उनकी कीमतें 2 अमरीकी डालर § 72 रु. 80 पैसे § 1.9 अमरीकी डालर § 75 रु. 06 पैसे § और 1.7 अमरीकी डालर § 67 रु. 57 पैसे § प्रति शीट तक नीचे आ गई। ऑफ कट § 2'x4'x3 मि.मी. § की कीमत अक्टूबर 1997 में 17 रु. 66 पैसे प्रति पीस से फरवरी-मार्च 1998 में लगभग 13 रु. 65 पैसे प्रति पीस तक कम हो गई।

यह तर्क दिया गया है कि एन.बी.एल. के उत्पादन की गुणवत्ता में ठीक नहीं थी। इस संबंध में यह देखा गया है कि सामान्यतः शुष्क प्रक्रिया द्वारा निर्मित हार्ड बोर्ड, गीली प्रक्रिया द्वारा निर्मित हार्ड बोर्ड से गुणवत्ता में अधिक अच्छा है जो अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अधिक मूल्य पर खरीदा जाता है। फिर भी एन.बी.एल. जो शुष्क प्रक्रिया द्वारा अपना उत्पाद बनाता है, का उत्पाद घरेलू बाजार में सबसे कम कीमत पर बेचा जाता है जिसका कारण शायद निम्न गुणवत्ता हो सकता है। डब्ल्यू.आई.पी. तथा जे.बी.एल. के उत्पादों की गुणवत्ता के विषय में किसी भी प्रकार की समस्या का उल्लेख नहीं किया गया है। इसके विपरीत यह प्रस्तुत किया गया कि डब्ल्यू.आई.पी. का उत्पाद गुणवत्ता में आयातित हार्ड बोर्ड से अच्छा था और जे.बी.एल. का उत्पाद गुणवत्ता में आयातित हार्ड बोर्ड जैसा है।

यहाँ यह कहना उचित होगा कि एन.बी.एल. उत्पाद दोनों ओर से चिकना है जबकि डब्ल्यू.आई.पी. और जे.बी.एल. के उत्पाद एक ओर से चिकने तथा दूसरी तरफ नैट फिनिश के हैं। स्लेट निर्माता दोनों तरफ से चिकने हार्ड बोर्ड प्रयोग में लाते हैं तथा घरेलू उत्पादकों ने कहा कि एन.बी.एल. उत्पाद का लगभग 20% ही स्लेट उद्योग में प्रयोग किया जाता है। एन.बी.एल. उत्पाद का शेष भाग वे प्रयोग में लाते हैं जो अपने उत्पाद में एक ओर से चिकना और दूसरी ओर से नैट फिनिश हार्ड बोर्ड प्रयोग में लाते हैं। आयातित हार्ड बोर्ड अधिकतर एक तरफ चिकना और दूसरी तरफ नैट फिनिश का होता है। मोटर गाड़ी उद्योग में अधिकतर $8 \times 4 \times 3$ मि.मी./ $6 \times 4 \times 3$ मि.मी. आकार का एक साइड से नैट फिनिश शीट का हार्ड बोर्ड प्रयोग में लाया जाता है। $8 \times 4 \times 3$ मि.मी./ $6 \times 4 \times 3$ मि.मी. आकार की शीट्स अन्य प्रयोजनों के लिए भी प्रयोग में लाई जाती हैं तथा भारतीय बाजार में $8 \times 4 \times 3$ मि.मी./ $6 \times 4 \times 3$ मि.मी. आकार की शीट प्रयोग में लाई जाती रही हैं। फिर भी $2 \times 4 \times 3$ मि.मी. आकार के आयातित आफ कट, मोटर उद्योग को छोड़कर, $8 \times 4 \times 3$ मि.मी./ $6 \times 4 \times 3$ मि.मी. आकार की शीट के स्थान पर प्रयोग होने लगीं। इस प्रकार आयातित हार्ड बोर्ड ने प्रतिस्पर्धा की तथा डब्ल्यू. आई.पी. और जे.बी.एल. ही नहीं अपितु एन.बी.एल. के उत्पाद का भी स्थान ले लिया। यह भी देखा जा सकता है कि मंगलम टिम्बर्स पिछले दो साल से 9 मि.मी. से 12 मि.मी. तक मोटाई का मध्यम डेन्सिटी फाइबर बोर्ड निर्यात के लिए बनाता था। उनकी बिक्री कुछ कम हुई और उन्होंने उसकी मोटाई 3 मि.मी. तक कम करके एन.बी.एल. के बाजार शेयर में कटौती करके घरेलू बाजार की संभावनाओं को तलाशा। एसोसिएशन ने यह माना है कि एम.डी.एफ को लगभग 2500 मी.टन प्रतिवर्ष मैसर्स मंगलम टिम्बर्स द्वारा बिक्री किया गया। एम.डी.एफ ने दोनों ओर से चिकना तथा गुणवत्ता में अच्छा होने के कारण कुछ सीमा तक एन.बी.एल. के उत्पाद का स्थान ले लिया है। एक व्यक्तिगत कार्य निष्पादन का विश्लेषण बताता है कि बाजार की कुल बिक्री 45175 मी.टन में से 10650 मी.ट. अर्थात् 23.57% का बाजार शेयर एन.बी.एल. का था। तथा कुल 46909 मी.टन कुल स्पष्ट उपभोग का 22.7% भाग था। एन.बी.एल. को 1997-98 में 3996 मी.टन की कम बिक्री हुई जबकि घरेलू उद्योग की 6946 मी.टन की कुल बिक्री कम हुई।

यहाँ पर तीनों घरेलू उत्पादकों के कार्य निष्पादन पर अलग-अलग चर्चा करना उचित होगा। जे.बी.एल. ने 1995-96 और 1996-97 की तुलना में 1997-98 में उत्पादन, क्षमता उपयोगिता तथा बिक्री में वृद्धि दर्ज की। जे.बी.एल. का उत्पादन वर्ष 1997-98 में 12864 मी.ट. §1996-97 में 11898 मी.टन§, उपयोगिता क्षमता 1997-98 में 73.3% §1996-97 में 67.79%§ तथा बिक्री 1997-98 में 12334 मी.ट. §1996-97 में 11852 मी.ट.§ रही। डब्ल्यू. आई.पी. को 1996-97 की तुलना में 1997-98 में उत्पादन में लगभग 2661 मी.ट. §11.4%§ की हानि हुई जबकि उपयोगिता क्षमता 1996-97 में 94.5% से 1997-98 में 83.73% तक गिर गई। इसी प्रकार उनकी बिक्री भी

1996-97 में 22673 मी.टन से गिरकर 1997-98 में 19919 मी.ट. § 12.14/§ रह गई । सबसे अधिक क्षति एन.बी.एल. को हुई जिनका उत्पादन 1996-97 में 10568 मी.ट. से कम हो कर 1997-98 में 7313 मी.टन अर्थात् 3255 मी.टन § 30.8/§ रह गया तथा उपयोगिता क्षमता में 1996-97 में 70.45/ से 1997-98 में 48.75/ की क्षति हुई । उनको बिक्री 1996-97 में 10650 मी.ट. से घट कर 1997-98 में 6654 मी.टन रह गयी अर्थात् 3996 मी.ट. § 37.5/§ की हानि हुई ।

उपरोक्त से यह देखा गया है कि जे.बी.एल. § जो कुल घरेलू क्षमता का 30.66/ प्रतिनिधित्व करता है § ने 1996-97 की तुलना में 1997-98 में उच्च उत्पादन, उपयोगिता क्षमता तथा बिक्री प्राप्त की । जे.बी.एल. के लाभ में कमी हुई, फिर भी 1997-98 में उनको बिक्री पर 5.9/ का लाभ हुआ । 1995-96 में बिक्री पर उन्होंने 16.1/ का मुनाफा कमाया और 1996-97 में बिक्री पर 7 प्रतिशत का लाभ हुआ । डब्ल्यू.आई.पी. § जो कि समस्त घरेलू क्षमता का 43.14/ का प्रतिनिधित्व करता है § को भी 1995-96 में बिक्री पर 8.3/, 1996-97 में 8.5/ और 1997-98 में 7.9/ का लाभ हुआ । यह भी देखा गया है कि डब्ल्यू.आई.पी. ने घरेलू बाजार में अपने उत्पाद की सर्वोच्च कीमत प्राप्त की है । उनका उत्पाद गुणवत्ता में बेहतर माना जाता है तथा वह मोटर उद्योग में प्रयोग के लिए होता है । वे मोटर उद्योग के लिए और भी श्रेष्ठ गुणवत्ता का बोर्ड बनाने का लक्ष्य बना रहे हैं जिसका स्थान आयातित हार्ड बोर्ड नहीं ले सकता है ।

जहाँ तक एन.बी.एल. § जो कि कुल घरेलू क्षमता का केवल 26.2/ का प्रतिनिधित्व करता है § का प्रश्न है, जैसा कि पहले ही चर्चा की जा चुकी है, वे शुष्क प्रक्रिया द्वारा दोनों ओर से चिकने हार्ड बोर्ड बनाते हैं जबकि आयातित हार्ड बोर्ड साधारणतया एक तरफ से चिकना और दूसरी तरफ नेट फिनिश का होता है । हालाँकि स्लेट उद्योग द्वारा एन.बी.एल. उत्पाद को प्रयोग में लाया जाता है एन.बी.एल. उत्पाद का एक बड़ा भाग दूसरों के उत्पाद की तरह ही प्रयोग किया जाता है । गुणवत्ता की समस्या के कारण एन.बी.एल. का उत्पादन सबसे कम कीमत ले पाता है । बिक्री से प्राप्ति की तुलना में उत्पादन की अधिक लागत के कारण हानि उठाने वाले केवल वही हैं । फिर भी कई कारणों से जैसे कि निम्न गुणवत्ता, स्थिति संबंधी हानियों आदि के कारण वे हानि उठा रहे हैं ।

यह भी तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्यमियों ने घरेलू मांगों को पूरा नहीं किया और माल को सप्लाई कम की । इस विषय में यह देखा गया है कि घरेलू उत्पादक लगभग 47000 से 48000 मी.टन प्रतिवर्ष के कुल घरेलू उपभोग के विरुद्ध 57250 मी.टन प्रतिवर्ष की स्थापित क्षमता रखते थे। गत तीन वर्षों में डब्ल्यू.आई.पी. में 102 प्रतिशत का, जे.बी.एल. 73 प्रतिशत तथा एन.बी.एल. 70 प्रतिशत की क्षमता उपयोगिता का लक्ष्य प्राप्त कर सके है । इस प्रकार उन्होंने कुल $48500 \text{ मी.टन } \times 24700 \times 102 \text{ प्रतिशत} + 17550 \times 73 \text{ प्रतिशत} + 15000 \times 70 \text{ प्रतिशत}$ § का उत्पादन करने में सफल हुए । उन्होंने यह स्पष्ट किया कि संयंत्र के रख रखाव आदि के लिए बन्द के दौरान बाजार में अस्थाई रूप से आपूर्ति कम रही होगी । इस संबंध में यह भी देखा गया है कि घरेलू उत्पादकों का भण्डार में 1996-97 में 2270 मी.टन से बढ़कर 1997-98 में 4899 मी.टन हो गया । इसलिए ऐसा कोई कारण नहीं है जिससे कि यह कहा जा सके कि घरेलू उत्पादक घरेलू मांग की आपूर्ति नहीं कर सकते थे ।

उपरोक्त वर्णन से यह देखा गया कि कम कीमत पर आयातित हार्ड बोर्ड का आना घरेलू उत्पादों की कीमतों में कटौती का मुख्य कारण रहा दूसरे कारण भी रहे, जिससे घरेलू उद्योग को गम्भीर क्षति हुई ।

§ च § समायोजन योजना

वर्ष 1997-98 में लगभग 90% आयात थाईलैंड से आरम्भ हुआ । घरेलू उत्पादकों का कहना है कि थाईलैंड में हार्ड बोर्ड के चार कारखाने हैं जो प्रति माह 17000 मी. टन हार्ड बोर्ड का उत्पादन करते हैं जबकि भारत में 4000 मी. टन मासिक की क्षमता है । भारतीय उत्पादकों की तुलना में थाईलैंड के उत्पादकों की लागत की भिन्नता का विश्लेषण करने पर उन्होंने निम्नलिखित आँकड़े प्रस्तुत किए हैं :-

मद	थाई लागत ₹. ₹.	भारतीय लागत ₹. ₹.
I. कच्चा माल	800 मी. टन	1200-1300 मी. टन
II. विद्युत	2 प्रति यूनिट	4 प्रति यूनिट
III. ईंधन	200 मी. टन	600 मी. टन

घरेलू उत्पादकों द्वारा उपरोक्त हानिकारक कारणों के रहते हुए थाई द्वारा आयात के प्रस्ताव की प्रतिस्पर्धा से निपटने के लिए उन्होंने निजी समायोजन योजना प्रस्तुत की हैं ।

जे. बी. एल 15 करोड़ की लागत खर्च से अपनी क्षमता 17,550 मी. टन से 47550 मी. टन तक बढ़ाना चाहती है और इसके लिए उन्होंने 8 करोड़ रुपये खर्च भी कर दिए हैं । उन्हें आशा है कि विस्तार से लागत खर्च कम हो जायेगा । वे हार्ड बोर्ड के विनिर्माण में वेस्ट वुड के स्थान पर शत-प्रतिशत बेगास का प्रयोग करने की परिवर्तन योजना बना रहे हैं । इससे उनके ईंधन के खर्च में भी बचत होगी क्योंकि बेगास में पिघ और वेस्ट पाया जाता है जो ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए ईंधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है । वे अपने संयंत्र का स्थानान्तरण मुम्बई से सांगली कर विद्युत उत्पादन खर्च एवं श्रम खर्च घटाना चाहते हैं इससे पिछड़े क्षेत्र में संयंत्र लगाने के लाभ मिलेंगे । इसके अलावा ऐसा प्रतीत होता है कि बेगास से हार्ड बोर्ड का विनिर्माण करके जे. बी. एल उस पर केंद्रीय उत्पाद शुल्क भुगतान में भी छूट का लाभ पाना चाहता है ।

डब्ल्यू. आई. पी. के पास 80 से 85 करोड़ ₹. की लागत खर्च द्वारा अपनी क्षमता को दुगुना करने के लिए महत्वाकांक्षी विस्तार योजना है जिसमें से 60 करोड़ रुपये उन्होंने पहले ही खर्च कर दिए हैं । वे मितव्यय में अधिक उत्पादन स्वचालन ऊर्जा में बचत और गुणवत्ता में सुधार कर उत्पादन लागत में कमी के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं । आयातित बोर्ड का निषेध करने के लिए डब्ल्यू. आई. पी. दो वर्ष में एक बोर्ड बनाना चाहता है जो कि कीमत में आयातित बोर्ड के तुलनात्मक होगा और मोटर उद्योग की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए गुणवत्ता में उससे श्रेष्ठ होगा ।

एन. बी. एल. एक बम्बू चिप्पर स्थापित करना चाहता है जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन की लागत में कमी और कच्चे माल की बेहतर उपलब्धि और तैयार उत्पाद के लिए टिम्बर की बढ़ी हुई मात्रा मिलेगी । उन्होंने

फैनेल के स्थान पर कर्डनल §15/§ को प्रतिस्थापित किया है । इन सब प्रयासों से उत्पादन की लागत में लगभग 15% की कमी होने की आशा है ।

उपरोक्त के अनुसार यह देखा गया है कि जे.बी.पल. पहले से ही पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में है जिससे उत्पादन की लागत कम हो जायेगी । हार्ड बोर्ड विनिर्माण में बैगास के प्रयोग से वे केंद्रीय उत्पाद शुल्क छूट के भी पात्र हो जाएंगे जो एक अतिरिक्त लाभ होगा ।

डब्ल्यू.आई.पी. उत्पाद घरेलू बाजार में उच्चतम कीमत प्राप्त कर रहा है और यह माना जाता है कि उनके उत्पाद गुणवत्ता में बेहतर तथा सामान्य रूप से मोटर उद्योग के लिए बनाए जाते हैं । उन्होंने अपनी समायोजन योजना में यह विशेषकर कहा है कि वर्ष 1998-99 में उनको लागत में बचत नहीं होगी । बल्कि ब्याज और मूल्यहास के कारण लागत और अधिक होगी । तत्पश्चात् विनिर्माण लागत चालू विनिर्माण लागत जितनी हो रहेगी । इसीलिए डब्ल्यू.आई.पी. की पुनर्निर्माण योजना चालू समय में आयातित हार्ड बोर्ड की कीमत से स्पर्धात्मक नहीं होगी । तथापि उन्होंने कहा है कि वे मोटर उद्योग के लिए उत्कृष्ट किस्म का बोर्ड बनाने का लक्ष्य बना रहे हैं जिसके आयातित बोर्ड द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकेगा । इसीलिए रक्षोपाय शुल्क उनके लिए अप्रासंगिक होगा ।

जहाँ तक एन.बी.पल. का संबंध है, जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, गुणवत्ता के कारण उनका उत्पाद न्यूनतम कीमत प्राप्त कर पाता है केवल वे ही एक ऐसे हैं जिनकी बिक्री की तुलना में और उत्पादन लागत अधिक होने के कारण हानि उठा रहे हैं । उनको बहुत कारणों से हानि हो रही है जैसे कि अनुत्तम गुणवत्ता प्रतिकूल स्थान परन्तु यह पाया गया है कि अन्य बातों के साथ-साथ उन्होंने कोई विस्तृत और अवलम्बनीय पुनर्निर्माण योजना का विवरण भी नहीं दिया है जिसके अनुसार वे अच्छी किस्म का उत्पाद प्रतियोगी लागत पर उत्पादित कर सकेंगे तथा इस प्रकार निश्चित समय सीमा में आयात प्रतिस्पर्धा से निपट सकेंगे । वास्तव में उन्होंने यह कहा है कि उनकी प्रबल कछा होते हुए भी राजनैतिक परिस्थितियाँ और हिंसात्मक गतिविधियों के कारण बड़ी विस्तार योजना को क्रियान्वित नहीं कर सके हैं । कच्चा माल कठिनाई से उपलब्ध होने तथा अभियान के कारण वे अपनी उत्पादन क्षमता को भी नहीं बढ़ा पाये और इसके अलावा उनका संयंत्र पुराना हो गया है जिसको बदलने में पर्याप्त धन की आवश्यकता होगी ।

§18 § जनहित

हार्डबोर्ड फर्नीचर फोटो फ्रेम आदि सहित विभिन्न प्रयोजनों में प्रयोग किया जाता है । देखा गया है कि देश भर में हार्ड बोर्ड फर्नीचर, फोटो फ्रेम आदि विनिर्माण के लिए प्रयुक्त होता है और एक बड़ा जन समुदाय इस उद्योग से जीवन निर्वाह करता है । हार्डबोर्ड के वे महत्वपूर्ण प्रयोक्ता वर्ग हैं । लेकिन संभवतः संगठित समूह न होने के कारण उनकी ओर से कोई अभ्यावेदन नहीं किया गया है । आयातित हार्ड बोर्ड पर रक्षोपाय शुल्क उनके हित पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा । जनहित में होने पर ही रक्षोपाय शुल्क को न्यायोचित ठहराया जा सकता है । जनहित का क्षेत्र बड़ा विशाल है जिसकी परिधि में समाज कल्याण, विशाल जन समुदाय का हित शामिल है इसमें वे भी शामिल हैं जो हार्ड बोर्ड के छोटे-छोटे उपभोक्ता हैं । घरेलू उत्पादकों ने कोई तर्कसंगत तथा अवलम्बनीय पुनर्निर्माण योजना प्रस्तुत नहीं की है जिसके द्वारा समग्र घरेलू उद्योग समतुल्य उत्पाद स्पर्धात्मक कीमत पर आपूर्ति कर सकेगा । इसीलिए आयातित हार्ड बोर्ड पर किसी प्रकार रक्षोपाय शुल्क लगाने की सिफारिश करना जनहित में नहीं होगा ।

§ ज § निर्यातक देशों का हिस्सा

उपलब्ध सूचना के आधार पर भारत में हार्ड बोर्ड निर्यातक देशों का हिस्सा है - जो भारत में हार्ड बोर्ड का आयात है, निम्न प्रकार से है :-

देश	1997-98	
	परिमाण	प्रतिशत
थाईलैंड	8722.59	89.46
साऊथ अफ्रीका	328.36	3.36
अन्य	698.55	7.18
	9749.50	100.00

च. निष्कर्ष और सिफारिश

12. उपरोक्त चर्चा अनुसार हार्डबोर्ड के घरेलू उत्पादकों को हार्ड बोर्ड के बढ़ते हुए आयात से मुख्यतः समग्र रूप से महत्वपूर्ण हानि एवं इस प्रकार गंभीर क्षति हुई है। तथापि घरेलू उत्पादकों ने कोई तर्कसंगत और अवलम्बनीय पुनर्निर्माण योजना भी प्रस्तुत नहीं की है जिसके द्वारा घरेलू उद्योग समग्र रूप से समतुल्य उत्पाद स्पर्धात्मक कीमत पर आपूर्ति कर सकेगा। घरेलू उद्योग की पुनर्निर्माण योजना भी रक्षोपाय शुल्क के लगाने को न्यायोचित नहीं ठहराती क्योंकि रक्षोपाय शुल्क लगाने से केवल बढ़ा हुआ लाभ वसूलेंगे जबकि कुछ की हानि में कुछ कमी हो जाएगी। रक्षोपाय शुल्क लगाने का उद्देश्य घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति से रोकना है ताकि बढ़ते हुए आयात की स्पर्धा के अनुकूल अपना समायोजन कर सके। ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान मामले में रक्षोपाय शुल्क लगाना न तो पूरी तरह इस उद्देश्य की पूर्ति करेगा और न ही यह जनहित में होगा।

पूर्ववर्ती चर्चा तथा भारत सरकार द्वारा, 2 जून 1998 से प्रभावी, आयात शुल्क की दर में की गई दस प्रतिशत प्वाइंट की वृद्धि एवं तदनुसार हार्ड बोर्ड के घरेलू उत्पादकों के संरक्षण के स्तर में 35/ से बढ़कर 45/ की हुई वृद्धि को ध्यान में रखते हुए भारत में आयातित हार्ड बोर्ड पर रक्षोपाय शुल्क लगाकर 45/ मूल्यानुसार के संरक्षण के वर्तमान स्तर में बढ़ेतरी की कोई सिफारिश नहीं की जाती है।

[फा. सं. रक्षोपाय/जांच/4/98]

आर. के. गुप्ता, महानिदेशक

DIRECTOR GENERAL (SAFEGUARDS)**NOTIFICATION**

New Delhi, the 12th November, 1998

**Subject : Safeguard Investigation concerning imports of Hard Board (High Density Fibre Board)
into India—Final Findings.**

G.S.R.720(E).—Having regard to the Customs Tariff Act 1975 and the Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 thereof.

A PROCEDURE

2. The Notice of initiation of Safeguard investigation concerning imports of Hard Board into India was issued on 24th April 1998 in pursuance of an application filed by the All India Fibre Board Manufacturers Association and was published in the Gazette of India Extra Ordinary part II - section 3 - sub-section (i) on 24.4.98. A copy of the Notice was also sent to all known interested parties namely:-

Association

The All India Fibre Board Manufacturers Association.
C/o Jolly Board Ltd., Mumbai-400020.

Domestic Producers

- (i) The Western India Plywoods Ltd., Kannur - 670010.
- (ii) Jolly Board Ltd., Mumbai - 400020.
- (iii) National Boards Ltd., Bangalore (having factory at Panikhaiti, Guwahati-781026).

Importers

- (i). Sri Durga Enterprises, Chennai- 6000012.
- (ii) Rainbow Exports, Ghandhidham- 370201.
- (iii) Balaji Timber & Plywood, Chennai -600007.
- (iv) Team Traders, Chennai-600003.
- (v) Jai Mirror Industry, Chennai - 600 112.
- (vi) Indomal Marketing P. Ltd., Chennai - 600 007.
- (vii) Sri Krishan Timber Traders, Chennai - 600 112.
- (viii) Mahaveer Agencies, Chennai - 600 003.
- (ix) Indo Thai Enterprises, Chennai - 600 040.
- (x) Gautam Glass, Hyderabad.
- (xi) Fibre Foils Ltd., Mumbai - 400093.
- (xii) Hindustan Electro Graphites Ltd., Bhopal - 462016.

Exporters

- (i) Agro Lines Co. Ltd., Thailand.
- (ii) Thai Cane Board Co. Ltd., Thailand.

- (iii) Metro Fibre Co. Ltd., Bangkok.
- (iv) Masonite Africa Ltd., South Africa.

3. A copy of the Notice was also sent to the following exporting countries through their Embassies in New Delhi:

- (a) Thailand, (b) South Africa, (c) Malaysia, (d) Italy and (e) Pakistan

4. Questionnaires were also sent on the same day to the aforesaid Domestic Producers, Importers and Exporters who were asked to submit their response by 7th June 1998. Replies to notice and questionnaire were received from the following parties:-

Domestic Producers:

- (i) M/s. Western India Plywoods, Kannur.
- (ii) M/s. Jolly Board Ltd, Mumbai.
- (iii) M/s. National Boards Ltd, Bangalore.

Importers:

- (i) Sri Durga Enterprises, Chennai-600112.
- (ii) Indo Thai Enterprises, Chennai-600040.

Exporters:

- (i) M/s. Agro lines Co. Ltd., Bangkok, Thailand.

5. Response to the notice has also been filed by the following:

- (a) M/s. Mahaveer Mirror Industries, Chennai-600003.
- (b) M/s. System Building Technologists, New Delhi.
- (c) M/s. Sejpal and others, Mumbai-400057.

6. Verification of the information considered necessary for the investigation was done and to this end a team of officers visited the premises of M/s. National Board Ltd, Guwahati; M/s. Jolly Board Ltd., Mumbai; M/s. Western India Plywoods Ltd., Kannur; M/s. Mahaveer Mirror Industries, Chennai and M/s. Indo Thai Enterprises, Chennai. The outcome of the verification was conveyed to the concerned parties.

7. A Public Hearing was also held on 25.9.98, notice for which was sent to all interested parties on 28.8.98. The parties were asked to submit in writing the information presented by them in the Public Hearing so as to reach the Office of the Director General (Safeguards) by the 6th Oct. 1998 and to collect copies of written submission made by other parties on 7th Oct. 1998. Rebuttals, if any, were asked to be submitted by 26th Oct. 1998.

B VIEWS OF DOMESTIC PRODUCERS

8. The domestic producers have made the following main points:

(a) National Boards Limited, Bangalore.

- (i) They are manufacturers of Hardboard also known as High Density Fibre Board

(A Grade) of various specification /description by Dry Process meeting the ISI specifications (IS 1658-1977). Their plant at Panikhaiti, Guwahati is designed to manufacture Standard Hardboard for which they possess the necessary industrial license.

(ii) Their product is used for wall and ceiling linings, panelings, partition, furniture, slates, chalkboards, television, radio backs, automobile caravans, rail coach interiors, flush Door facings, exhibition work etc.

(iii) They manufacture and sell only 'A' Grade quality hardboard.

(iv) Since Imported 'B' and 'C' grade cannot be distinguished from their 'A' grade, customers are substituting their product with the imported ones.

(v) Imported product and their product are the same.

(vi) Due to curtailment of production and erosion of profits on account of massive imports during May-July 1997 they had to lay off workers and close their operation for some days. The total mandays lost were 24824 including that of contractual workers.

(vii) Their sales realisation dropped appreciably due to price undercutting by exporters. The selling price of Rs.10426/MT inclusive of excise duty in April / June 1997 declined to Rs. 10151/MT in Jan/March 1998 and has shown a declining trend since then.

(viii) Their inventory has increased from 814 MT in 1996-97 to 1473 MT in 1997-98 which is attributed exclusively to increased imports.

(ix) During the year 1997-98 there has been a sudden surge in the imports of hardboard which resulted in their losing 1/3rd of their domestic market share.

(x) Apart from huge quantities of hardboard flooding the Indian Market, the landed Cost of imported hardboard has progressively declined ranging from Rs.91.22 per sheet to Rs. 83.91 per sheet inclusive of customs duty. The landed cost is less than their ex-Mill prices compelling them to reduce their prices further to stay in the market.

(xi) As part of the adjustment plan they intend to install Bamboo Chipper Machine which will help them to use bamboo as raw material as against firewood and this will enable them to reach optimum production target of 14000MT per annum against their installed capacity of 15000 MT per annum.

(xii) They have successfully substituted cardnol (15%) in place of phenol which will reduce the manufacturing cost by Rs. 50/-MT

(b) Western India Plywood Ltd., Kannur

(i) They are manufacturers of Hardboard (also called High Density Fibre Board), through Wet Process, of various description, conforming to BIS 1658 of 1977. Besides Hardboard they also manufacture plywood, densified wood, furniture, glass reinforced plastics, DAP Resin and DAP Monomer.

(ii) Hard boards manufactured by the company are used by Automobile Industry for door pads, Building industry for partitioning, ceiling, shoe manufacturing, furniture making etc. In respect of industrial users the company deals directly with them as their requirements are finely specified and varies from order to order. They have been supplying to Maruti and other automobile manufactures since inception and have met very demanding specifications, often the specifications are far more rigid than ASTM or BSS specifications.

(iii) Their sales realisation dropped substantially due to price under cutting by

foreign producers. The selling price which was Rs.14804.34 per MT during October/December 1997 declined to Rs.13981-39 P in Jan/March 1998.

(iv) Their inventory increased from 1336 MT in 1996-97 to 2776 MT in 1997-98.

(v) During the financial year 1997-98 there had been a sudden surge in the imports of hard board which captured one third of their Market Share.

(vi) Besides huge quantities of hard board flooding the Indian Market, the landed cost of imported hardboard has progressively declined to rates ranging from Rs. 91.22 per sheet to Rs. 83.91 inclusive of customs duty. These rates were less than their ex-mill prices.

(vii) Internationally hard board is manufactured in 3 grades viz. A,B and C while the company manufactures only A grade.

(viii) Most of the Hard board imported into India was of 'B' and 'C' grade and off cut sizes. The said grades of goods imported is comparable to their product and cannot be distinguished. Their customers were substituting their product with the imported ones, which is causing them grievous injury.

(ix) As part of the adjustment, they have undertaken modernisation of their Plants at a cost of Rs.63 crores for enhancement of their capacity from 24700 MT per annum to 34000MT per annum. Heavy imports at cheaper rates have seriously jeopardised their plans to modernise/enhance their capacity. They are confident of making Hardboard in two years time which will compete in price with the imported board and it will not be possible for the Thai based manufacturers to meet the quality requirements of the automobile industry.

(x) The company has completed the replacement cum modernisation project and commercial production has commenced from 14th March 1998 in the new plant imported from M/s. Sunds De Fibrator, AB Sweden who are reportedly the internationally renowned suppliers of machinery for manufacture of Hardboard. The modernisation of the plant has resulted in considerable savings of inputs and a marked improvement in the quality of Hardboard manufactured.

(c) Jolly Board Ltd, Mumbai:

(i) They are manufacturers of Hardboard, Insulation Board and Ceiling Tiles.

(ii) Imported Hardboards are same as the Hardboard (one side smooth) manufactured by them.

(iii) Their Sales realisation dropped substantially due to price under cutting by Exporters. The selling price of Rs.14924 per MT inclusive of excise duty in October 1997 declined to Rs 13592/- and Rs 12376/- per MT during January 1998 and March 1998 respectively. The trend in declining selling prices continue. Sales of Hardboard have been adversely affected because of cheap imports coming in from South East Asia particularly Thailand who were in a position to reduced their prices to half because of advantage from the devaluation of "Baht". They had reduce their prices by 20% to be on par with Thai manufacturers and had to curtail production for avoiding inventories getting built up due to massive imports.

(iv) Their inventory has increased from 120 MT in 1996-97 to 650 MT in 1997-98.

(v) During the financial year 1997-98 there had been a sudden surge in imports of hardboard, consequent to which they lost 1/3rd of their market share to the importers.

(vi) Besides huge quantities of hard board flooding the Indian Market, the landed cost of imported hardboard has progressively declined to rates ranging from Rs. 91.22 per sheet to Rs. 83.91 inclusive of customs duty. These rates were less than their ex-

mill prices.

(vii) Internationally hard board is manufactured in 3 grades viz. A,B and C while the company manufactures only A grade.

(viii) Most of the Hard board imported into India was of 'B' and 'C' grade and off cut sizes. The said grades of goods imported is comparable to their product and cannot be distinguished. Their customers were substituting their product with the imported ones, which is causing them grievous injury.

(ix) Hard board imports originating from Thailand were at prices 50 % lower than prevailing prices of Indian product, even after paying Import duty of 35%. Besides devaluation of Thai currency as an advantage, Thailand has 4 Hard Board Mills producing 17000 MT per month as against capacity of 4000 MT p.m. of Indian manufacturers. The enormous capacity and its optimum utilisation, with poor domestic demand has forced them(Thai Manufacturers) to sell their product at rock-bottom prices with very little profit which has its adverse impact on the Indian Manufacturers.

(x) As part of the adjustment plan, they have undertaken capacity expansion/enhancement by 30000 MT at a total cost of Rs. 15 crores by setting up a plant at Sangli which is nearing completion. They are switching over to a change of raw material from firewood to bagasse for manufacture of Hard board in order to reduce cost at their new plant at Sangli, Maharashtra.

(d) All India Fibre Board Manufacturers' Association

(i) The contention of the importer that the Hardboard manufactured by National Board is not 'Hardboard' is not correct. It is reiterated that whether it is one side smooth or both sides smooth, the Hardboard manufactured by National Boards continues to remain Hardboard. There are two ways in which Hardboard can be manufactured namely wet process and dry process. WIP and JBL use wet process and National Board uses dry process. In fact dry process is the latest and superior to wet process due to pollution problems created by the discharge of effluent in the wet process. The licence issued to National Boards industry is for the manufacture of Hardboard. The excise paid by National Boards Ltd for years is under Hardboard classification. In all documents pertaining to State/Central Government and other Municipal authorities their product is referred to as Hardboard for the purpose of sales tax and other levies. The ISI certification is also in the name of Hardboard.

(ii) It has been stated by the importers that Hardboard manufactured by National Board Limited is used only by manufacturers of slates which is not correct. National's sale to slate industries hardly constitutes 15/20% of their total sales. The balance sales are towards manufacture of writing pads, examination pads, lamination, photo frames etc.

(iii) The imported Hardboard from Thailand is very much competing with the National Hardboard in all applications of Hardboard except 'slate making' which constitutes hardly 15/20% of National's sales. National Hardboard is the worst affected unit due to massive imports.

(iv) Due to different interpretation of certain items and due to difference in opinion on the allocation of cost to various heads due to multi product manufacture in the case of WIP, the Officers of the DG(SG) observed that WIP and National's cost had been over stated to some extent.

(v) With the commencement of massive imports coming into the Indian markets,

the Indian industry started piling up their stocks and had been forced to curtail their production. Notwithstanding increase in the Customs duty by 10% even considering the post budget landing cost of imported and indigenous hardboard, there is still a gap of 28% on 8' x 4' x 3MM; 41% for 2' x 4' x 3MM and over 100% in rejected Hardboard. The landing rate of imported hardboard in whatever garb it has come, whether B grade, C grade, rejected hardboard, offcuts and scrap had not only been lesser than the cost of indigenous hardboard, but the gap between them is substantial. If this gap persists, it will be well nigh impossible for the indigenous industry to compete with B grade, C grade, rejected hardboard, offcut sizes and other varieties being imported into the country in one garb or another.

(vi) The fall in capacity utilisation of Western India is entirely due to the massive imports coming into the country. Notwithstanding lesser capacity utilisation, the fact that stocks have piled up with the indigenous manufacturers matching with the quantity of imported Hardboard clearly shows the nexus between imports and falling production, capacity utilisation and sales of the indigenous industry.

(vii) At no point of time the Hardboard Manufacturer Association had stated that Hardboard of size 8' x 4' is used by automobile sector only. Infact most of the users of Hardboard in India buy hardboard in 8' x 4', 6' x 4' and then they cut it according to their requirements.

(viii) It is not correct to say the automobile sector did not use imported Hardboard. Mayur Industries and Auto Interiors Pvt. Ltd. Who have been the two biggest vendors of automobile industries have imported several consignments of hardboard only for supply to auto industry.

(ix) At no point of time there had been any shortage of Hardboard as alleged by the importers. Hardboard manufacturing is a continuous process and the plant has to be shut down every year for annual maintenance, boiler inspection, during which time the supply of the boards to the market could get disturbed. During such times both Western India and JBL have meticulously ensured free and equitable distribution of their products to all their regular dealers depending upon their normal of takes in the earlier periods and did not allow any casual adhoc "fair weather dealer" to exploit the situation. Therefore, the allegation of shortage of hardboard is nothing but a ploy to justify the easy imports of offcuts and rejects.

(x) The rate of 2' x 4' had never been proportionate to the size of 8' x 4' and it has been invariably lesser than the standard size rate as would be evident from the data submitted by Agrolines themselves where the price of 8' x 4' is US\$ 1.45, whereas that of 2' x 4' was 0.33 cents equivalent to US\$ 1.32 for 8'x4'. Under cutting of Hardboard prices under the garb of B grade, C grade, off cuts, rejected Hardboard, and scrap is killing the indigenous industry. The Indian consumers had always been using indigenous Hardboard in 8' x 4' and 6' x 4' size and cutting it as per their requirements. Imports are taking place at ridiculously low rates which is ruining the indigenous industry and it has to be thwarted if the indigenous industry has to survive. Even today Hardboards are being imported into the country at prices ranging from US\$ 1.20 to US\$ 1.45 per sheet of 8' x 4' x 3 mm.

C VIEWS OF EXPORTERS

9. The following main points have been made by the exporters.

Agrolines Company

(i) M/s. Agrolines Company Thailand a subsidiary of Sun Hua Seng Group (SHS) was established in 1992 with a purpose to produce quality Hardboard to meet domestic and overseas demand.

(ii) During 1992 to 1996, 90% of their production was for domestic consumption. The balance was exported to countries like Indonesia, Malaysia, Phillipines, Fiji, Japan and Papua - New Guinea.

(iii) Due to economic compulsion caused by financial crisis, the local demand for the product has declined and the company expects to export besides the countries at (ii) to new markets like Taiwan, Hongkong, Srilanka, Macronesia Islands, Brunie and India.

(iv) They export Hardboard under HS code 4411.11(441111005) - Fibreboard of wood/other ligneous material of density exceeding 800Kgs/cubic metre of various standard sizes and specifications. Hardboard manufactured by them is used as construction material, furniture material, in packaging, the industrial use being for lamination and for use by audio component manufacturers etc.

(v) They have a capacity of 48000 MTs per annum against which they produced 37492 MT, 42777 MT and 44932 MTs during 1996, 1997 and 1998 respectively; their capacity utilisation being 78.11% , 89.10% and 93.61% during the said period.

(vi) Their cost of production of sheet of size 4'X8'X3 mm was as under:-

1996	63.39 Baht
1997	43.00 Baht
1998	38.03 Baht
1999	38.03 Baht(Projected).

(vii) Their export selling price per unit of Hardboard of size 1220 X 2440 X 3 mm (8'x4'x3 mm) was as under:-

1996	2.96 US \$
1997	2.10 US \$
1998	1.80 US \$

(viii) They have two agents in India namely:-M/s. Sri Durga Enterprises Chennai-600012 and M/s. Kelbro Corporation, Chennai-600010.

(ix) The decline in the CIF prices in the case of Hard Board supplied by Agro Lines Co. Ltd, had been the result of the sharp drop in the Exchange rate of the Thai Baht against US\$ since late 1997. This situation which had developed over a period of time i.e., between the second half of 1997 and the first half of 1998 was a natural economic and market driven phenomenon and was not the result of any artificial conditions or intervention by the exporting country's Govt. with a view to protect the exporting companies.

(x) The drop in prices was the result of certain economic developments and there was nothing unusual in Agro Lines Co. Ltd., following the general pricing pattern adopted by the Thai Companies as well as the Companies from the other countries in the region. Moreover the price of Hard Board sold in Thailand was lower than the price of Hard Board exported to India at any given point of time.

(xi) There is no specific process limitation or cost escalation in the manufacture of

4' x 2' sheet size even though the manufacturers generally prefer to supply 8' x 4' sheet to the extent possible for obvious reasons such as manufacturing and shipment convenience, cost advantage etc. The prices generally offered by Agro Lines Co. Ltd for supply of the smaller size of the Hardboard sheet i.e., 4' x 2' size etc. is directly proportionate to the price of a 8' x 4' sheet size or in most of the cases it is higher in comparison. The Indian manufacturers are therefore not in any way at a disadvantage in this regard.

(xii) It is a fact that the import prices have been steadily coming down during the last year, with regard to Hardboard sold by Agro Lines Co. Ltd. The prices were fluctuating widely during the period as various lower grades of material were acceptable to Indian Market particularly the high seasonal demand for Paper Clipping Boards and Photo frames in the 1st quarter of the year (1998) in comparison to some of the indigenously produced material available in the market. During this period substantial quantity of Grade 'B', Grade 'C' as well as Grade 'R' (Rejected Grade) were imported from Agro Lines Co. Ltd as the Hard Board supplied with these defects were found to be acceptable to the Indian Market because of its value for money.

(xiii) Presently the prices are around US\$ 1.70 to 1.75 per sheet (8' x 4'). There is no doubt that the prices have more or less stabilized at a higher level than it was being supplied earlier this year. With the Thai Baht getting stronger against the US\$ and the general improvement in economic situation in that country there is no reason to believe that the prices will go any lower in the near future and consequently there seems to be no justification whatsoever for the safeguard intervention.

(xiv) It is with the interest of the end users of various products in view, that the Govt. Of India had relaxed the import conditions as well as customs duties when the liberalisation process commenced in 1991-92. The conscious decisions adopted by the Govt. has been to take India towards a market driven economy which alone will correct the imbalances in the sheltered economy prevailing till then. In the long run this was expected to help Indian products reach higher standards in quality, capacity etc. resulting in substantial export earnings for the country as well.

(xv) The Govt of India has increased the Basic Customs Duty for Hard Board and MDF by 10% in the 1998-99 Budget. The overall cascading impact of this increase works out to approximately 14%. This increase in Customs Duty along with the escalation in the cost of imports due to the depreciation of the Indian Rupee against the US\$, the import cost have gone up by nearly 27-28% during the last one year as far as the Hard Board is concerned.

(xvi) No further duty burden on the import of Hard Board be imposed and on the other hand to consider rolling back of pre 1998 level the Customs Duty on Hard Board in the interest of the end users of this product in India who mainly belong to the lower income segment of the population.

D VIEWS OF IMPORTERS

10. The importers/users have made the following main points:

(a) **M/s. Mahaveer Mirror Industries, Chennai-600003.**

(i) The application made by the All India Fibre Board Manufacturers Association is totally misleading with a view to taking advantage of monopolistic atmosphere created by domestic producers. The imports of Hard board was as a sequel to combat

the monopolistic trend and exploitation by the domestic producers.

(ii) National Boards Ltd (NBL) is not manufacturing 'Hard board' which could be considered as similar to the ones being imported. NBLs capacity utilisation and other factors pertaining to NBL which have been furnished in support for imposing safeguard duty has no relevance.

(iii) Imported Hardboard is of inferior quality to that of product manufactured by M/s. Western India Plywoods but equivalent to the product of M/s Jolly Board, quality wise. No import of Hard Board is being made which is similar to the product of NBL.

(iv) All Types of Hard Board cannot be called as High Density Fibre Board: There are many foreign substances found in 'Hardboard' which are absent in High Density Fibre Board and Medium Density Fibre Board.

(v) The quality of imported Hard Board is such that its use has been rejected by the automobile Industry due to high water absorption vis-a-vis the indigenous product.

(vi) The domestic producers have furnished exaggerated figures of imports by including all kinds of High Density Fibre Boards, Medium Density Fibre Boards, Masonite Board etc.

(vii) The figures in respect of imports of Hardboard are furnished on the basis of projections and not on actual basis. The quantity of Hardboard imported into India is very meagre vis-a-vis the total quantum of domestic production.

(viii) The Hardboard manufactured by Jolly Board and Western India Plywood respectively are different with regard to its specifications which is also evident from the price differential of their products marketed.

(ix) The domestic manufacturers should have no objection to the import of admittedly B and C Grade material, since the domestic producers claim they manufacture only 'A' grade Hardboard.

(x) Domestic producers Western India Plywoods and Jolly Board in connivance with each other monopolised and maintained a high price level. The production of Hardboard increased by just 193 MTs during 1994-95 to 1996-97 which in itself reveals that they were not alive to the increase in demand but preferred to jack up prices at regular intervals.

(xi) The domestic manufacturers have miscalculated the landing cost of imported hard board by excluding L/c expenses, Bank charges, C & F Port Trust charges etc which works to around 10 % in addition, for working out the correct feasible landing cost Besides in order to project a low landed cost they have included all cut & offsize Hardboards instead of standard size Hardboard.

(xii) No undercutting of prices - reduction in prices due to emergence of more suppliers and overseas competition amongst them.

(xiii) Misguiding cost of production furnished by domestic manufacturers. The cost of sales of indigenous Hardboard at Rs. 13910/- per MT is an exaggeration. Depreciation and interest cost should not be taken into account as the Plants are 30-40 years old and their accumulated Reserves are quite satisfactory and the domestic producers (WIP-JB) have registered good profits during the period under consideration, of course, there may be some repairs and maintenance not affecting the cost of production.

(xiv) The domestic producer(WIP) used to export 1/3rd of their production. The fall in capacity utilisation is due to lesser exports. Shut down and labour redundancy as a sequel is due to other extraneous factors and not due to imports.

(xv) Expansion of capacity will not reduce the cost of production but the capacity utilisation to the optimum. Post budget landed cost of sales of imported Hardboard

(1998-99) is 12.12 % higher than pre budget cost. The cost of imports per MT prior to 1998-99 budget works out to Rs. 13834/- which is almost equivalent to the cost of sales of domestic producers.

(xvi) With the imposition of additional 8% duty on all imports and enhancement of basic customs duty from 30% to 40% , plea for imposition of 42.66% safeguard duty of the landed cost inclusive of Customs duty, may not arise since there may be no adverse impact of imports on either price or quantity of sales of domestic producers.

(xvii) It is not true that the imported Hard Board supplied by M/s. Thai Plywood (reportedly a Thai Govt. Owned company) is akin to the Hard Board manufactured by National Boards Limited, Guwahati. The Bangna Board manufactured by M/s. Thai Plywood is one side smooth only and otherside it is net finish. It is not similar to M/s. National Boards Limited. It is similar to the one manufactured by M/s. Western India Plywood and M/s. Jolly Boards Limited.

(xviii) Western India Plywoods and Jolly Boards Ltd. are the only two local manufacturers of Hard Board in India.

(xix) NBL's product is not used for manufacturing of writing pads because the lamination is not effective on both sides smooth Hard Board of NBL's. Further in the photo framing industry the printed paper picture slips down after fixing the NBL's both side smooth Hard Board due to uneven flat surface and lack of net finish on one side of the Hard Board. NBL's product is used in these two industries as a last resort.

(xx) The NBL's product produced with Dry Process do not face competition from the Hard Board imported from Thailand as there is no factory in Thailand making Hard Board with Dry Process. Hence, there is no question of import of both side smooth Hard Board from Thailand.

(xxi) Local manufacturers have stated that they are going for the larger expansion plans of 50,000 metric tonnes. This kind of expansion would have been permitted by the Government and the financial institutions on the basis of proper surveys and reliable projections given by the domestic manufacturers with regard to the demand in India market. If it is true then there should not be hue and cry from domestic manufacturers when the quantity imported into India is around 10,000 metric tonnes.

(xxii) In the Central Budget declared on 2.6.98 the Custom Duty on import of Hard Board, MDF Board and Particle Board is increased by 10% resulting in overall effect of increasing 11%. Consequently the import of Hard Board became completely unviable and also due to the devaluation of India Rupee by about 8% in terms of US\$. Due to the above increase in the cost of imports, the importers were forced to stop imports completely. The consignments which were booked prior to the Budget were only received. M/s. Kitply Industries Limited alone imported Hard Board after Budget due to the Company's prior commitment to the foreign suppliers.

(xxiii) The domestic producers have reduced the price by less than 10% which is not due to the import but due to the General recession in the market.

(xxiv) When there is increase in the capacity utilisation of the local plants, could be labour redundancy as claimed by them in the application is not understood.

(xxv) The selling price of imported Hardboard is higher than the selling price of the local manufacturers of Hard Board.

(xxvi) Prior to imports, the dealers had to literally beg for their requirements before the domestic manufacturers. There was no supply of Hardboard of more than 50 sheets at a given time against the requirement of 300 to 400 sheets. The domestic manufacturers have taken the advantage of monopolistic situation created by them by not increasing the production but increasing the price with the increase in demand.

The import of Hardboard has come as a relief in the draught situation created by the domestic manufacturers.

(b) M/s. Sri Durga Enterprises Chennai-600012.

They have expressed identical views to that of M/s. Mahaveer Mirror Industries.

(c) M/s. Indo Thai Enterprises, Chennai-600040.

(i) The landed cost computation of imported Hardboard is erroneous and is exclusive of C & F expenses.

(ii) For an import of 4800 sheets of B Grade Hardboard the C & F, Loading/unloading expenses works to nearly Rs. 16000/- to Rs.18000/- or Rs 3.75 per sheet.

(iii) The computation of landed cost is mere cosmetic. Most of the importers go for import cover owing to volatility in the Market and hence an arbitrary price of dollar is vague or misleading .

(iv) The proposed SG duty by the domestic producers is not in the interest of the consumers. This will lead to cartelisation. In the event of imposition of Safeguard duty, it will come under MRTP purview.

(v) The Supreme Court judgment on plywood based industries in the North Eastern region in particular and the country in general should be considered before slapping Safeguard duty.

(vi) Domestic companies can act as canalising agencies or may consign or have some pact with the exporting countries through bilateral dialogues.

(vii) The imported 'B' grade Hardboard is similar to that of Hard board manufactured by domestic producers and can be used interchangeably.

(d) M/s. System Building Technologists (SBT) New Delhi-110019 , and

(e) M/s. Seipal & Others, Mumbai-400057.

(i) They are importers of Densified Wood Fibre Plates for manufacturing door shutters falling under chapter 4411.11 and 4411.19 of Customs Tarrif Act'1975.

(ii) The item imported is not in the form of plain sheets but moulded plates specifically meant for assembly of finished door shutters. The goods imported are not manufactured in the country.

(iii) The Govt. of India keeping in mind the enormous environmental benefits have exempted payment of customs duty on 'Densified wood Fibre Plate' to the established actual assemblers of Door Shutters.

(iv) The moulded Densified Wood Fibre Plates for Door Shutters are a different class and type of material quite distinct from sheets.

(v) While considering the application of domestic Hard board producers for imposition of Safeguard duty, Densified Wood Fibre Plates may be excluded.

E FINDINGS OF THE DIRECTOR GENERAL

11. I have carefully gone through the case records and the replies filed by the domestic producers, importers and exporters of Hardboard. Submission made by the various parties and the issues arising therefrom are dealt with at appropriate place as

under:-

(a) **Product Involved**

(i) The product under investigation is Hard Board of density exceeding 0.8 gm/cubic centimetre and is generally classified under sub-heading No.4411.11 and 4411.19 of the First Schedule to the Customs Tariff Act, 1975, and under 44111100 and 44111900 of the Indian Trade Classification (ITC). Hardboard is a sheet material manufactured from fibres of lignocellulosic material with the primary bond deriving from the felting of the fibres and their inherent adhesive properties. It is produced by **wet process and dry process**. In the wet process fibre separated from chips of Nilgiri and Ainwood is diluted with water and pumped to the wet forming machine at further diluted consistency. Chemicals like paraffin wax and binding resins are added to give the board predetermined properties, to ensure uniform quality and to improve the water resistance of the board. The pulp is dosed to the inlet of the forming machine where an endless fibre mat is formed which is cut into sheets for further processing. In the dry process the chips are exposed to high steam pressure for a short time in a steel cylinder and thereafter a valve is quickly opened and the contents blown out. Due to the rapid decrease of pressure, the chips are exploded into fibre-bundles and fibre. Dry fibres are handled pneumatically and fed through blowers on the forming machine. Appropriate resin is then mixed and the board is formed and the sheets are pressed under heat and pressure. Hard Board is available in A, B and C grades which are used for interior decoration, frame making, furniture making, for door trims in automobiles, for packaging and by drum manufacturers. The domestic producers manufacture only 'A' Grade Hard Board. Hard Board is also being classified under 44112900 and 44119900 of ITC.

(ii) The domestic producers manufacture Hard Board by Wet Process and Dry Process meeting the ISI specifications (IS: 1658-1977). The general and preferred size being 8' x 4' x 3 mm and 6' x 4' x 3mm, although thickness and size may vary on customer's request. As per the specifications laid down, Hard Board is generally classified into the following three types according to their method of manufacture and other related mechanical and physical properties namely Medium Hard Board, Standard Hard Board and Tempered Hard Board. The product under investigation would come under the scope of Standard Hard Board which has been defined as a homogenous fibre building board having a density exceeding 0.8 gm per cubic centimetre.

(iii) Besides Standard Hardboard, Densified Wood Fibre Plates are also being imported for manufacturing door shutters falling under chapter 4411.11 and 4411.19 of the Customs Tariff Act 1997. These are not in the form of plain sheet but are moulded plates specifically meant for assembly of 'door shutters' which are not reportedly manufactured in India. The domestic manufacturers have also excluded the quantum of imports if any in this regard from the figures furnished by them. Therefore these are not covered in the present proceedings. Similarly, Mesonite Board is also not covered in the present proceedings.

(iv) The classification of the product involved i.e. Hard Board under the Customs Tariff Act, 1975 or ITC is indicated only for the purpose of convenience and in no way has any bearing on the scope of the product covered in the present investigations.

(b) Domestic Industry

The application has been filed by the All India Fibreboard Manufacturers Association on behalf of the domestic producers of Hard Board. There are three domestic producers of Hard Board accounting for the entire domestic production of Hard Board namely M/s Western India Plywoods Ltd, Kannur (WIP), M/s. Jolly Boards Ltd (JBL) Mumbai and M/s. National Boards Ltd. (NBL), Bangalore and all are members of the Association. NBL manufactures Hardboard (both sides smooth) by dry process whereas JBL and WIP manufacture Hardboard (one side smooth other side net finish) by wet process. The application, therefore, is considered to have been made by the domestic industry.

(c) Increased Imports

Till 1994-95 there were no imports of Hard Board entering into India. From 1995 onwards Hard Board is being imported into India from Thailand, South Africa, Italy and Pakistan. Hard Board attracted import duty of 65% in 1994-95, 50% in 1995-96 and 35% in 1996-97 and 1997-98. The Customs Duty was enhanced by ten percentage points in the Budget 1998-99. The domestic producers stated that the imports of Hard Board were 141.57 MT in 1995-96; 839.14 MT in 1996-97 and 11227 MT in 1997-98. The applicants claimed the import figures to be part data only, as data of imports of Hardboard through the Ports of Vizag, Kandla and Dry Port/ICD are not available in public domain for the relevant period. The DGCIS data relates to and includes import data of all types of fibre building board including Hard Board. The importers alleged that the statistics furnished by the domestic producers with regard to import of Hardboard appeared to be inclusive of all varieties of Hardboard including certain specialised varieties of Fibre board and medium soft board. However, the importers did not substantiate and furnish any authentic statistics of imports of Hardboard into India during the relevant periods. The importers relied on the details furnished by the domestic producers and modified the same by deleting such quantum of imports effected by certain firms who in their opinion did not import Hardboard similar to the one manufactured by the domestic industry. The import figures furnished by applicants have, however, been subjected to verification and adjusted for exclusion of products other than Hardboard for the purpose of investigation.

Accordingly the imports and domestic production of Hard board during 1995-96 to 1997-98 are observed as under:

Year	Domestic Production (MT)	Imports (MT)	Import as a % of domestic production
1995-96	43738	136.55	0.31
1996-97	45808	1734.18	3.78
1997-98	40858	9749.5	23.86

From the data tabulated above it is observed that the imports in absolute terms have increased from 136.55 MT in 1995-96 to 9749.50 MT in 1997-98, registering an increase by about 7040%. As a percentage of domestic production

the imports have increased from 0.31% in 1995-96 to 23.86%. Thus, the imports have increased both in absolute terms as well as compared to domestic production.

(d) Injury

The factual position regarding various parameters having a bearing on the state of domestic producers is tabulated as under:

Year	Installed capacity (MT)	Production (MT)	Capacity Utilisation %	Sales (MT)	Closing Stock (MT)
1995-96	57250	43738	76.04	44644	1637
1996-97	57250	45808	80.01	45175	2270
1997-98	57250	40858	71.37	38229	4899

It is observed from the data tabulated above that the domestic production which had gone up from 43738 MT in the year 1995-96 to 45808 MT in the year 1996-97 has come down to 40858 MT in the year 1997-98 i.e. a fall in production of 10.80%. The Capacity Utilisation which had gone up from 76.4% in the year 1995-96 to 80% in the year 1996-97 has gone down to 71.37% in the year 1997-98. The domestic sales which had also gone up from 44644 MT in the year 1995-96 to 45175 MT in the year 1996-97 have come down to 38229 MT in the year 1997-98 i.e. a loss of 15.37% resulting in significant increase in closing stock to the tune of 4899 MT in 1997-98 as compared to 2270 MT in the year 1996-97. The domestic producers could achieve the reduced sales only at reduced prices. National Board reduced its selling price (inclusive of Central Excise Duty) from an average of Rs. 10426/- per MT in April-June 1997 to Rs.10151/- per MT in January-March 1998. Similarly, in the case of Western India the average selling price declined from Rs.14804/- per MT during October-December 1997 to Rs.13981/- per MT in January-March 1998 and in the case of Jolly Boards the average selling price declined from Rs.14924/- per MT in October 1997 to Rs.13592/- in January 1998 and to Rs.12376/- per MT in March 1998.

The domestic industry has also lost employment. National Board alone have lost 24824 mandays in 1997-98. Jolly Board lost 3540 mandays. In all the domestic industry lost 28364 mandays in 1997-98.

It is, therefore, observed that the domestic industry has suffered a significant overall impairment in its position and thus have suffered serious injury.

(e) Causal link

Although the domestic industry has suffered a significant overall impairment as observed above, it is necessary to analyse the cause thereof. The domestic industry comprises of three manufacturers namely National Board Limited (NBL), Western India Plywood Limited (WIP) and Jolly Board Limited (JBL). NBL has an installed capacity of 15000 MT per annum, WIP 24700 MT per annum and JBL 17550 MT per annum. Altogether, the domestic industry has a total installed capacity of 57250 MT per annum. The production and capacity utilisation which reached a peak of 45808 MT and 80.01% respectively in 1996-97, declined to 40858 MT and 71.37%

respectively in 1997-98. At the same time the apparent domestic consumption (domestic sales plus imports) increased marginally to 47979 MT in 1997-98 from 46909 MT in 1996-97 i.e. an increase of about 2.28%. The domestic producers, however, lost their share in the apparent domestic consumption from 45175 MT in 1996-97 to 38229 MT in 1997-98 i.e. they lost a share of 6946 MT. The import during this period increased from 1734.18 MT in 1996-97 to 9749.5 MT in 1997-98 i.e. an increase of 8015.32 MT which replaced the domestic sales. In this regard the domestic producers have stated that the imports of off cuts i.e. Hardboard of sizes smaller than 8'x4'x3 mm/6'x4'x3 mm and generally of size 2'x4'x3 mm, which entered at prices which were lower than the prices of sheets of standard size i.e. 8'x4'x3 mm have replaced their 'A' grade Hardboards. The off cuts of size 2'x4'x3 mm entered the Indian market at an average c.i.f. price of Rs.15.81 per piece (Rs.63.24 for size 8'x4'x3 mm) in 1997-98 as against an average c.i.f. price of Rs.79.68 per sheet of size 8'x4'x3 mm and Rs.58.48 per sheet of size 6'x4'x3 mm (Rs.77.97 for size 8'x4'x3 mm).

The imported Hardboard had been entering the Indian market at declining prices in 1997-98. Sheets of size 8'x4'x3 mm which were imported at US\$ 2.4 (Rs.86.24) per sheet in July 1997 declined to about US\$ 2.3 (Rs.83.72) per sheet for imports entering during August 1997 to November 1997. The prices further declined to US \$ 2 (Rs.72.80), US\$ 1.9 (Rs.75.06) and US\$ 1.7 (Rs.67.57) per sheet in the subsequent period till March, 1998. The off cuts (2'x4'x3 mm) prices declined from Rs.17.66 per piece in October 1997 to about Rs.13.65 per piece in February-March 1998.

It has been contended that the NBL product suffered in quality. In this regard, it is observed that generally the Hardboard manufactured through dry process is of better quality as compared to Hard board manufactured through wet process and fetches a higher prices internationally. In the case of NBL who use dry process for manufacturing their product, however, fetches the lowest prices in the domestic market which perhaps may be due to quality considerations. WIP and JBL products have not been reported to have any quality problems. On the contrary it has been submitted that WIP product is superior in quality as compared to the imported Hardboard and JBL product matches with the imported Hardboard in quality.

It would be appropriate to mention here that the NBL product is 'both sides smooth' whereas the WIP and JBL products are 'one side smooth and one side net finish'. The slate manufacturers use 'both side smooth' Hardboard and it has been stated by the domestic producers that about 20% of NBL product is used in the slate industry. The balance of the NBL product is used for other purposes for which one side smooth and one side net finished Hardboard is used. The imported Hardboard is generally one side smooth and one side net finished. The Automobile Industry generally uses Hardboard with one side net finished in sheets of size 8'x4'x3 mm /6'x4'x3 mm. These sheets of 8'x4'x3 mm /6'x4'x3 mm, are also used for other purposes and the Indian market had all along been using sheets of sizes 8'x4'x3 mm/6'x4'x3 mm. The imported offcuts of size 2'x4'x3 mm have, however, substituted the sheets of 8'x4'x3 mm/6'x4'x3 mm for uses other than in the Automobile Industry. The imported Hardboard, therefore, competed and replaced the product of not only WIP and JBL but also that of NBL. It may also be observed that

Mangalam Timbers till two years back manufactured medium Density Fibre Board of 9 mm to 12 mm thickness for export. They lost some sales and explored the domestic market cutting into NBL's market share by reducing thickness to 3 mm. The Association have admitted that approximately a quantity of 2500 MT of MDF is being sold by M/s. Mangalam Timbers per annum. MDF being both sides smooth and being qualitatively superior to that of Hardboard (both side smooth) replaced NBL's product to some extent. An analysis of individual performance indicates that NBL had a market share of 10650 MT in the total domestic sale of 45175 MT (i.e. 23.57%) and a share of 22.7% in the total apparent consumption of 46909 MT. NBL's loss of sale was 3996 MT in 1997-98 out of the total loss of sales of about 6946 MT suffered by the domestic industry.

It would be appropriate here to discuss the performance of the three domestic producers separately. JBL registered an increase in the production, capacity utilisation and sales in 1997-98 as compared to 1995-96 and 1996-97. JBL achieved a production of 12864 MT in 1997-98 (11898 MT in 1996-97), capacity utilisation of 73.3% in 1997-98 (67.79% in 1996-97) and sales of 12334 MT in 1997-98 (11852 MT in 1996-97). WIP, however, lost production of about 2661 MT (11.4%) in 1997-98 over 1996-97, with corresponding decline in the capacity utilisation to 83.73% in 1997-98 from 94.5% in 1996-97. Similarly they lost sales from 22673 MT in 1996-97 to 19919 MT in 1997-98 i.e. 2754 MT (12.14%). The worst sufferer was NBL who lost production from 10568 MT in 1996-97 to 7313 MT in 1997-98 i.e. 3255 MT (30.8%) and loss of capacity utilisation from 70.45% in 1996-97 to 48.75% in 1997-98. They also lost sales in 1997-98 to 6654 MT from 10650 MT in 1996-97 i.e. a loss of 3996 MT (37.5%).

From the above it is observed that JBL (which represent 30.66% of the total domestic capacity) achieved higher production, capacity utilisation and sales in 1997-98 as compared to 1996-97. JBL lost on profit but still in 1997-98 they made a profit of 5.9% on sales. In 1995-96 they made a profit of 16.1% on sales and in 1996-97 they made a profit of 7% on sales. WIP (which represent 43.14% of the total domestic capacity) also made a profit on sale of 8.3% in 1995-96, 8.5% in 1996-97 and 7.9% in 1997-98. It is also observed that WIP product fetches the highest price in the domestic market. Their product is admittedly of better quality and generally meant for automobile industry. They are targeting to manufacture a board of superior quality for the automobile industry which cannot be substituted by imported Hardboard.

As far as NBL (which represent only 26.2% of the total domestic capacity) is concerned, as already discussed, they manufacture Hardboard with both sides smooth using dry process whereas the imported Hardboard is generally one side smooth and one side net finished. Although slate industry uses NBL product, a major proportion of NBL product is used for the same purposes as others' products. Owing to their quality constraints, NBL product fetches the lowest price. They are the only one incurring losses as a result of higher cost of production as compared to their sales realisation. They have, however, been suffering on account of various factors such as inferior quality, locational disadvantages etc.

It has also been argued that the domestic producers did not meet with the domestic demand and short supplied the material. In this regard, it is observed

that the domestic producers, in all had an installed capacity of 57250 MT per annum as against the total domestic consumption of about 47000 to 48000 MT per annum. In the last three years WIP has been able to achieve a capacity utilisation of about 102%, JBL of about 73% and NBL of about 70%. They could thus have achieved a total production of about 48500 MT ($24700 \times 102\% + 17550 \times 73\% + 15000 \times 70\%$). They have, however, explained that during plant shut down for maintenance etc., there could have been some temporary short supplies in the market. In this regard, it is also observed that the inventory of the domestic producers has increased from 2270 MT in 1996-97 to 4899 MT in 1997-98. There is, therefore, no ground to hold that domestic producers were not able to meet with the domestic demand.

From the above discussions, it is observed that while the undercutting of domestic prices by the imported Hardboard entering at declining prices was one of the most important reasons, other factors also existed which caused serious injury to the domestic industry.

(f) Adjustment Plan

In the year 1997-98, about 90% of the imports originated from Thailand. The domestic producers have stated that Thailand has four Hardboard mills which produce a total of 17000 MT of Hardboard per month as against India's capacity of 4000 MT per month. Analysing the variable cost of Thai producers as compared to Indian producers, they have submitted the following data:

Item	Thai Cost (Rs.)	Indian Cost (Rs.)
(i) Raw material 'waste wood'	800/MT	1200-1300/MT
(ii) Electricity	2 per unit	4 per unit
(iii) Fuel	200/MT	600/MT

To meet with the competition offered by the Thai imports on account of the above disadvantages suffered by the domestic producers, they have submitted individual adjustment plans.

JBL intend to expand their capacity from 17550 MT to 47550 MT at a total outlay of Rs.15 Crores out of which they have already spent Rs.8 Crores. Through expansion they expect to achieve economy of scales. They are also planning change over to 100% use of Bagasse for the manufacture of Hardboard in place of waste wood. This would also result in saving of fuel cost as Bagasse contains one third pith and waste which can be used as fuel for energy generation. They also intend to reduce power generating cost and labour cost by shifting their plant from Mumbai to Sangli and to get the benefit of setting of plant in backward region. Besides, it appears that JBL also intend to avail the benefit of exemption from payment of Central Excise duty on Hardboard manufactured from Bagasse.

WIP also has ambitious expansion plans of doubling their capacity with a total outlay of Rs.80 to 85 Crores, out of which they have already spent nearly Rs.60 Crores. They intend to achieve reduction in cost of production through economy of

scales, automation, energy saving and quality improvements. WIP intend to make in two years, a board which will compete in price with the imported board and which will be superior in quality to meet the requirements of Automobile Industry to the exclusion of imported Hardboard.

NBL intend to install a Bamboo Chipper which will result in reduced cost of production, better availability of raw material and increased yield of timber to finished product. They have also substituted cardnol (15%) in place of phenol. All these efforts are expected to cut down the cost of production by about 15%.

From the above it is observed that JBL are already in the process of restructuring and thereby reducing the cost of production. Use of Bagasse in the manufacture of Hardboard may also entitle them to the Central Excise exemption on Hardboard manufactured therefrom, as an added advantage.

WIP product fetches the highest price in the domestic market and their product admittedly is of better quality and generally meant for automobile industry. In their adjustment plan they have specifically stated that they would not achieve any cost savings in 1998-99, rather the cost will go up because of interest and depreciation costs. Subsequently, the manufacturing cost will remain the same as the current manufacturing cost. The restructuring plan of WIP will, therefore, not make them cost competitive with the currently imported Hardboard. They have, however, stated that they are targeting to manufacture a board of superior quality for the automobile industry which cannot be substituted by imported Hardboard. Imposition of safeguard duty is, therefore, inconsequential for them.

As far as NBL is concerned, as already discussed owing to their quality constraints, their product fetches the lowest price. They are the only one incurring losses as a result of higher cost of production as compared to their sales realisation. They have been suffering on account of various factors including *inter alia* inferior quality, locational disadvantages but it is observed that they have not provided details of any comprehensive and sustainable restructuring plan which would enable them to produce quality product at competitive prices and thus meet with the import competition in a time bound manner. In fact they have stated that despite their good intention, major expansion plans could not be pushed through because of disturbed political conditions and violent activities. The constraints on raw material availability had put a limit on increasing their capacity besides the 'drives' in their plant at Guwahati is outdated and its replacement would involve a considerable amount.

(g) Public Interest

Hardboard is used for various applications including furniture, photo frames etc. It is observed that throughout the country Hardboard is used in the manufacture of furniture, photo frames etc. and a large number of people earn their livelihood therefrom. They are an important user group of Hardboard, but no representation has been made on their behalf, perhaps as they are not an organised group. Safeguard duty on imported Hardboard would adversely affect their interest. Imposition of safeguard duty can be justified only if it is in public interest. The term 'public interest' is a much wider term and covers in its ambit the general social welfare taking into

account the larger community interest including that of small users of Hardboard. The domestic producers have submitted no convincing and sustainable restructuring plan whereby the domestic industry as a whole will be able to supply comparable product at competitive prices. It would, therefore, not be in public interest to recommend imposition of any safeguard duty on imported Hardboard.

(h) Share of exporting countries

On the basis of information available, share of exporting countries in India's imports of Hardboard was as under:-

Country	1997-98	
	Quantity	%
Thailand	8722.59	89.46
South Africa	328.36	3.36
Others	698.55	7.18
Total	9749.50	100.00

F CONCLUSION AND RECOMMENDATIONS

12. As discussed above, the domestic producers of Hardboard have suffered a significant overall impairment and thus suffered serious injury caused mainly by the increased imports of Hardboard. The domestic producers have, however, submitted no convincing and sustainable restructuring plan whereby the domestic industry as a whole will be able to supply comparable product at competitive prices. The restructuring plans of the domestic industry also do not justify imposition of safeguard duty as it may result only in realisation of enhanced profits or reduction of losses for some of them. The objective of safeguard duty is to prevent or remedy serious injury to the domestic industry with a view to enable them to make a positive adjustment to the competition offered by the increased imports. It appears that in the present case imposition of safeguard duty will not fully meet with this objective nor would this be in public interest.

In view of the foregoing discussions and considering that the Government of India has already increased the rate of import duty by ten percentage points with effect from 2nd June 1998 and the level of protection to domestic producers of Hardboard has increased from 35% to 45%, no recommendation to increase the existing level of protection of 45% ad-valorem by imposing safeguard duty on Hardboard imported into India, is made.

[F. No. SG-REP/4/98]

R.K. GUPTA, Director General